मुलाः — व्याचिम विश्वक भा, फोक मोखल आ॰, वांचोनिक ८५, फोकमोखल ५०, दिवमिनिक ७, फोक मोखल । ० वांचा। व्यवधिम विश्वक ५०।, फोक मोखल आ॰ वांचा প্রতি খণ্ড। প্রিজ্ঞাপন প্রকাশের মূল্যঃ—প্রতি প ক্তি, প্রথম, দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার ১০, চইুর্থ ও ততোধিকবার প্রত্যানা। ইংরেজী প্রতি পংক্তি। আনা।

৯ম ভাগ

किनिकां जाः २०१ दिनांश, — त्रक्षि विवात, मन ১२५० मान हे 851 (य

३५१७ माल।

३२ मर्थान

विड्डांशन। --- 301c3---

थारमाम क्यांत्र नाहिका।

मिश्क् व याञ्च, कानिश लाहे खित्र, हिना-वां कांत्र २৯,१० ७ ७५ न १ तमगग्न यूरत्त पांकारन ७ ७७ नः (ভालानाथ मूर्थाशाधारात लोकात्न श्राथा। चुला १०/ व्याना यां ख छ कि यां छल ०/ व्याना

निम्न निथिज পরীক্ষিত ঔষধ কলিকাতা ३৮ नः वामाशुक्त खी युक वातृ मंगी ज्यन प्तत थिविवा।

3। न्थिति वे काग्रिक्त। अहे गद्शियथ अजिनात उ देनांदेश वाशित विदल्य देशकाती ध्वर देश संबा जात्नक जादिशांशा लां कि कि तिशां हि। म ला ॥०० न्त्राक्षिर /३०

२। जीत्रकालीन शानिय जवा। शतियां ख वाङ्गिन এक চামচে পাन केतिल भातीत मिक्र, इজ-भीकांत्रक, ञाश्चित्रकांत्रक उ लिए हेत डेले प्रव नाम कतिदव। मूला॥०/० भोकिः ०/

७। वृद्ध हिम मार्गत जिला । धरे छे क छे जिल গাতে ব্যবহারে বায়ু পিত্ত রোগ সকল বিশেষ উপ-কার লাভ করিবে। যথাঃ—মাথা ঘোরা, বেদনা, भितः भी छ।, भां ज ज्ञाला, भंतीत ज्यमञ्चा, श्राक्रभं, চক্ষে ঘোর দর্শ, মন্তিকের ক্ষীণতা উদারাধ্যান, বায় डेकांत रेजां मि मूना > शांकिश अ

8। वाज्जाक रिजन इंशरिज विविध वाज यथा কামডালে, বিহুলে, কণকণে, হাত পা অবশ, বা छित धता यङ मिर्गत इडेक ना किन निन्ध्य है जा-शंगा इहेरव मृला ५० था। किः

क्षा कर्म (ज्ञाना जिला। भंजल, जान कूलकर्लि, तेक कुछ, পাছण, টাক, পারা দারা বা শোণিত বি-कृ उ इहेश। जा कत उर्शत ठ का का त म, ला ५० भागिक रे

७। कर्ग भीए। रेज्न। इश्रंड कर्णत कर्णत विनिध लीए।, कार्पत ভিতর ঘা, ও রদ বা পুঁজ शुंचन, वा विधित्र जा पांच जारतांगा इहेरव मूला ॥० नार्गिकः /50

व। শরীর শোধক ব টকা। মেহ ধাতৃত্ব পীড়া, ভূম ত্র, শ্বেত প্রদর, স্ত্রী লোকের বাধক পুরতন কাশী जाम थिंड, खना, जर्मा, प्रस्ता अ श्रक्ष श्वि श्व একটি রোগের ভিন্ন ২ অনুপান নিয়া দেবন কৈরিলে जुताश जारिताभा इहेरव म,ला ३०/ भारिकः ।

छ। शृहिनी ७ तक व्याधानात्यत विका। इहार्ड ত্তন বা পুরাতন আমাশয়, পেটের বেদনা, কাম-ना, उ गृहिनी शीषांत डेशमांग इहेरा। गूला ५ खे

৯। উপদংশ রোগ ও ঘার অতি উত্তম মলম॥ পারাসংশ্লিষ্ট রহিত) নানা বিধ গরামর অন্যান্য या। यथ। जूजन, श्रांजन या, नाली या वर्ण शीषात य य। विलग्ना थातक, পারার या, विष्णव उः कृ जन या विक मर्थाद्व मत्था व्यादां गा इहेर्व। मृला॥० वे/५० प्राप्त रि. (न वर्ष) डि, ज्य गिर्म, ज्यम, ज्यम,

ACT 1872.

KISHORI LAL SARKAR M. A. B. L.

Price Rs. 3

This is decidedly the best edition of the Plian Evidence Act that we have yet seen Babu Kissoree Lal Sircar has spared no pains to remove the difficulties which stand the unintiated readers of the Act in the face. He has made the work acceptable to the public generally. Law Observer,

To be had at the Amrita Bazar Putrika Office and Thacker Spink & Co's Library.

জেলা রাজনাহী নাটোরের সল্প্রিগ্র আতাহাইকুলা निवामी वामात वाचीत बिबीनाथ रेमद्वत ३१ वरमत ञातूष्मण इहेशार्ड्य। जाशामी रेजिन मार्त डाँहात छेक्त रेनिङ्क निर्काट्य छेपार्रा इहेट्ड । उड़्ला अहे विष्ठां शन मिट्डिइ या, यमि किह निस्न व व्यव विभिन्न উक्त देशवा महामदात जीविक महवाम । ठिकाना ५० दिना-छित्र शृद्धि व्यागातक मिए शाद्रिन अ दम है किकाना मड বিশ্বস্ত লোক গিয়া উক্ত ব্যক্তিকে প্রাপ্ত হন তবে আমি मंश्वाममाञादक ३०० छोका शाजिए जो विव । छे छ वािकित প্রাণিদ্ধ কোন তির্থ স্থানে, দেবালয় কি আংখড়া-দিতে থাকাই সম্ভব। যদি মৈতের মহাশ্র স্বহ্স लिখिन श्व दात्र। जाँ हात्र जीविक मश्याम जागारक मन তবে । छेर्न रिन इका नियर्ग हिन्छ इहर न।।

बराम ৫२। ৫০ वरमत, ञावसब ञाटभका क्रांक भार्त, छेख्य भाग्यवर्ग, कथारलव छेथव म किन मिरक इन सांख्यन ज् त निक्रे अक्री जाइली अमीर्थ क्रेंड मार्श अक्री, नाভित्र छेशेत थिएं दोनानाक मार्ग ७ वकिं कर्ष ছিন্ন দাগা।

**१** इ रेक्नांथ ने बी क्लवी कांख छ छो हार्च ताम नाताग्र श्रत थाना मथ त्रा, ভরেজ। পোষ্টাফিস ३२४० माल । (जगा शावना।

लीन जीयुक गरांता का विताक वर्षियांन প্রদেশাধিগতি বাহাত্রের

णमुर्यातिज अ जमु छा ज

- जिञ्जिकि भित्रिमनकि विशेष्णित जौश (व वर्षान्य अवशान्य

38७ नः लायात हिर्श्त ताफ कानाती वालाथाना, कलिकां जा।

छेशदर्शक खेरशानदा आग्रद्धन अर्था वा-क्या महज्ज मर्सिकांत रिज्ञारमंत्र नानाविश कक्रिया हिषश, टेन्न, शुन अ शांहनानि स्ना म्हाना म-र्मिना প্রশ্নত প্রাপ্ত হত্যা যায় এবং জনৈক উ-পযুক্ত চিকিৎসক সর্মদা তথায় উপস্থিত থাকিয়া बाबन्धा शूर्षक जेमशानि श्राना करतन।

वक्युक शीफांत मदशेषश।

हेश नियम श्रुकां क नावहांत कतिएल मामाना वक्षुक जवर मिर्विला, इस शर्मापत जाला उ मिखिएक दौनवन श्रञ्ज डिशमव मश्यूक मर्स-

शकांत्र मृद्धांतिका अ मञ्जूष्य र शीषा निः भिष्ठ प्राप्त (बांभा इस्

धक गांदमत वावश्रावाशयुक्त छेनव २ (किंदा कि दिव घ ७ । लिलि धक लाश

8 टोका

े देख्ला अ थे

8 है।का

नि। किर उ डांकमा छल

२ छे।का

क्छन इषा देखन।

हेश वावशदत निम्हत (कमा होनजा (देकि) द्व उ किल काकाल शंक जा थों ना इरेगा विलिध क्षण विभिन्न अ एमानायुक इस ववर मुख्य पूर्व थ ज्ञि निर्तिद्विशे जादियोग मिखक सभी उन । उ ठ कू जि इति इत। देश कि गत्नाइत ने अयुक्त। युला ३ लिलि ३ होका डाक्या ७ न । ४० जान

मिखाना धन हर्गा

इंश निय्यिष क्रिंश व्यवश्त क्रिल निक्ष्य मर्लशकात पश्च (ताभारताभा, पश्चम क कृष, गूर्थत इर्गक्ष मृत ध्वर मेख छेल्य छल वर्ग इत। ३ किछि। ॥० छाक्या छल ।० छान।

स्थाः छज् ।

हेश षाता यूथ मछत्नत विक्र किरु ( व्यथा द (गटा ) अ खन निम्ह यादाभा इस। एक जुक कांगल ७ পরিকার ছইয়া মুখ জী সমধিক বর্দ্ধিত उ वर्णंद छे९कर्घ मन्भाषिङ इय धवर छूनि, शामा-हि, इलकानि व्याद्वांगा इय । छेश मन् गञ्जा छ ।

३ किलिं ५० डाक्यां जन १० जाना वीविद्याम लाल (मन खश्र कवित्रां क कर्माशाक।

(योवत्न (याशिनी। (थिविशामिक मुन्धा कावा।)

ल्बे(भाषान्य मुस्थापाय थनीज। कलिकां जा. (मां जा वाजांत, ७० नर । धा बी दि अमरक् ज मेरलुब श्रुकान स्य श्रीश्रेवा, मृना 3 धक होका। एक माञ्ज 20 जाना।

वङ्गविद्धान् । श्री उद्योगिक छेलागाम।

बीतरमन्छल पख थागीज। कलिकांजा २८३ न १ वक्वाकात की है सानद्शां यद्य, १०० नः कत्नक छी छे कार्गानर लाहेरबहिरङ भाउरा यारा। मूला ४१० ডাক মাণ্ডল ১০ অনা।

> शक्त नक्ष नाहिक। बीयू क खरक कमात व्राव थानी जा

युना ५ धक है। का एक - द्वार । । जिन

कलिकां जा ७० नर कल्ला छि है किनिर लाई (खती (७, ४न१ (छ. ७) (ता (७, ७) भाग वाकांत कत (थारम थांथवा।

### विड्डांशन।

and the second

शांसंजी চরণ মুখোগাধায় প্রণীত লাবণাবতী बांगक कि जुकावर উপन্যাস कलिकां जा यांगार्शकूत (वर् छोट्रियात लाम मःऋ ज यद्वत शूक्रकोलरम > धक होका मृत्ला थाणा।

(मार नर २२४। ४४१६। वज्रानभागुः भाषि को छे देनियग्रिय हा देकि छै বিচারালয়ের [माथातन जानिय (म उशानि— विजात। नक्लांल (गन वन य

वाश्वाश भिन्ने धवश वाना धक वाकि। यक्षान्तः शां जिल्ला के के हिला स्था विक राहे-कां विठातालासत माथातन जानिय प्रवानी विভাগের সন ১৮৭৫ সালের २२৮ নম্বরের মোকদ্মা, याशिट नमलाल (मन वामी धवर जाखाडांव लार्थ ख ननी किटमाती मामी छाडियांनी इत, छेख यांक-क्यांत मन ३४१४ मोलात २ला मिलेटियत जातिथत ডिजी छानुमादत छेथातां छानां नाट कत दिकियोत नार्श्व कर्क्क जामाल गृश्श्व डांशा नीनाग घरत निस् लिथिज मन्शिज मन ३৮१७ मोलिइ २०११ (म अनियांत्र श्रीकाङ्क (वला धक घष्टिकात ममत्र विक्र इरेद्व।

मङ्त कलिकां जांत त्रकांवन वमात्थत द्वी विश्व ३० नश्रत्त (मार्क ७३ नः) (माङाना वमङ वाजित मद्रावस इक्क म्या ज्राम् ज्राम्य ज्राम्य जूशि थे मकल, य जिमित कथकां १८ नत छे नत छे ज व्यानूगानिक नानाधिक ভिन कांग्री गांति हरीक। छेख वांनी उ ज़्या श्व नकल निम्न लिथिज क्रांभ मीयांवम गंज हिन्दू आंधवां मी यांधवहन्त पर्वत हत्य छेहेल उ कार्ड, यथा উত্তরে वृत्सायन वनात्थत द्वीरे, मिक्स दिख्या एटिस्टिम शाख्य ध्वीर्य विश्व स्था ख्या जिल्ला कार्रि-गृजनीलमणि खरतत त्रांत्रजी किथि, शूर्य गृज कमन डिश्नियमिष्ड शहेरकार्छ विष्ठातालरात रिरिधियां लाहन बमाध्यत लांफाहिया वाही ववः विविधियत । ३ हेल्हे छित्रे विलाग हहे. ७ उपताङ छेहेलत ठेर्क्रवत मन्दित, शन्हिरम भूज तांगणन्त वस्मार्था- निथिज जनाजम धक् भी किहेहीत मभीज्ञा मरहक भारियत वग् वाणि।

श्रहिकाछित माधात्र आणिम प्रायुगनी विङा-भात दाजिम् । त मार्ट्यत आंकित्म अथवा बानीत शारिनी जियु ज वावू ग्रांमनधन मर जन जा कित्न व्यक्ति इषक धवः विकासित मर्छ मकल नीलारमत शृद्धि य कांन पितन पिथा यादे जिला विद खेश नीलारगत मगग उलाञ्च कता याहरव।

> R. Belchambers Registrar আর, বেল চেমারস রেজিফ ার ॥

वािम इश्लिख इरेडि मग्छ शािम अभाशि खेयथ व्यानाइयाहि। छाइलिউमन इेड्यांनि व्यामात ण्डहर् था छ उ इहे व । निम निष्ठ श्रुक उ जनग्ना ঔষধ এখানে পাওয়া যায়।

আমার প্রণীত

হোমিওপ্যাথি চিকিৎসা বিজ্ঞান यांग्र जाकगाञ्ज 3/0/0

उम थए, उम मश्था।

२য় मश्था 310 হোমিওপ্যাথি ভৈবজ্বভত্ত্ব उग मः था। 30/0

व्यर्गदर्शादशंत मदश्यभ तोगीता जाशन जाशन लक्न शोठा है वन

छोक द्वादगंत यदशेयव दािश अभाषिक (मण्डिमन (हर्छे

खलां छेठां त २० मिना वांका ३०

34

30 मिनि वोक्स

এই বাকা এক খানি পুত্ৰক থাকিবে যাহ। ছারা धरे किति वर्गाध उ रेश्त माना श्रकात श्रीतवर्डी उ शीषांत চিকিৎসা অতি সহজে করা যাইবে। ইহ निजांख मत्न जांयात्र निथिज।

> व्यीविशातिलाल ভाष्ट्रांड ७८ नः कर्वअशिलमधी है।

लर्ज लिंग्रेत्नतं क्रि।

चूउन गवर्गत (জनारवर्णत व्याउ डेश्क्ये लिर्था-थाक ছবি আমার নিকট বিক্রার্থে প্রস্তুত আছে। इইতে পারিবেন। मूला / 01

००७, हिज्भूत (त्रांड कलिकांडां।

শ্রীদ্বারিকা নাথ রার।

शक्ति जिंडियान, ३७००० भकार्थ शांख्या यांय म्ला॥०मालन /०। कलिकां छ। ७ ४ ८ थम। व ५ व ए विधान व्याशिका उँ कि ।

ग्रमा ध्रिवात मत्रक्ष्म।

व्यागता विला ७ रहेए व्या क छेखग छेखग मः मा धतियांत मत्रक्षम व्यर्थाः विनाजि ছिल, यूजा, क्रेन, शहे, वष्टिम इंडां कि वार्ड ज्लाड मूला विकशिद्ध व्यागमानि कतिशाहि। यांशत প্রয়োজন इश्व जि.न निम लिখिত ठिकानां य তত करितल मरिए य जनगंज ६३७ भातियन।

> ডि, এন, বিশ্বাস এবং কোঃ ७२ मः (एल राउम जक्यांत मिक्न वन्द्रकत (पोकान। কলিকাত।।

সহর কলিকাভার অন্তর্গত দিমলার প্রলোক श्रमख इहेशांटह।

य मकल वाङ डिপ वाङ मण्याङ वा था उना-मात विनिया मावि कर्त्वन छी हाता व्यन् श्रेह कर्त्रिया ठांशांदमत मानित निया छे भारतां क धक कि कि छे हो दित्र निक छ छ। शन कति (बन धवः (य मक्न वा कि छे छ সম্পতির ঋণী থাকেন তাঁহারাও অনুগ্রহ করিয়া उँशिप्ति वाशन वाशन पन। ऐक वाकित निक्रे वानां स कि तिदन।

> स्रम हा ला ५७ (कार ग्राहिनीं भन । Swinhæ Law & Co. Attorneys.

यरमांत्र (लांन (काम्लानी लिगिटिड यूलधन २००० विण श्राजात होका, खांड जर्भ मन होका।

३४७७। ३० जाईमानूमाद्रि, छेल (कान्नांनी স্থাপিত ও রেজেফরিক্লত হইয়াছে। কোম্পানি मर्ञाशत्नत व्यिख्यांत धाई (य, दोका कडब मिया राम श्रम् श्रम् करा ध्वर धे दे प्रमा माध-(नज्ञ জना अनार (म कर्मा कर्मा जवनाक जोहा कत्रभा

मर्विमाधांत्रनेटक जनाज कता यां इटिड (य क्ह काल्यानित मुन्य नित जार्भ

। अइन कितिए इष्ट्। कितिए आशामी देजार्छ भारमत भरधा यिनि यङ जार्भ लाहेरङ हेक्हा करत्रन ভौठा आगारक लिथिङ शर्जत घाता नाम निवामापि मइ ज्वां कदिर्वन। क्लिम्लाः नीत्र कार्या मश्रास्त्र (य (कान विषय (कङ् ज्यानि-তে ইচ্ছা করেন তিনি ষশোর লোন কোম্পা-नीत कार्गालएय जागांत्र निकडे जाश्वा जे काल्यानीत शरक (मत्निष्ण पित्रक छेत्र वीयु क वावू शार्तित्याइन छइ यश्भादित निक्छे छ्वा ङ

> छीकानी श्रम स (मन (गटक्र) ति लाग का न्यां न यदम्भात ।

ऐ ख. १ ख (थम

बिठ्य (अध्य ग्रुथाशाधा यथी । यूना ३ (अक टोका जांक मां छन % जाना। ०० नः कल्ल छोड क्यानिः लाई बार्तिङ श्वा ।

छ्ग नि खिज इदेए । । । । । अगि श्रांख देशा । यदश গত निवादत এकथानी लिश का । यह माक्लीन कार पारिनां जर जरज जे जक्र रिवेन काल काल्यारि निमिट्डि न त्य नित्रगमा (थ या गिराट्ड, जे लिला कात गर्था कडकछानि मानन आहि। छादा गाकनीन कार वाजे ज्ञांत कार बंजे প্রয়োজনীয় নহে जा अव य काम वा कि छेक लियाका প্राक्ष इहेग्ना इन जाहा इरेदक ध्वः व्यादश्यक इरेल भारिए जाबिक (मण्या इइरवक।

> MACNEILL & Co. 1, LYON'S RANGE.

নিম্নলিখিত পুস্ত চ ব্য কলেকাতা শোভগ वां जांत्र तां जानत्त्र कृष्ण वांश्वां इत्त ज्वान जीताद ज्व क्ष धार्वा निक छे लाख उ आ ए ।

श्राकात नक्मा मूला > होका डाकमा-लल % जाना।

यदनाइत छेथछोम यूना %० जाना छ।कगाउँ 10 WAI 1

### मकः अला मुला था थि।

बीयुक्त वां यू यां यथन शिक भिश, जां जी यां क्ष

षादिकानाथ ठक्कवर्खी, छ।का

मद्द्रजनाथ मत्रकात्र, शांत्र शांत्रिग (शां: जार्र (छल। यालम्

धम. धम, मख मञ्जूति, धम, एविनिडे, शि,

ने भाग हज्य वक् मि, ध्विष्

शक्षा हुन हुन । भाषा म

श्वांगिठल ठक्वर्डी, ब्रश्मिश्व विक्रांन

जानमहत्त्व तात्र मव इनटम्भक्तेत्र नखत्र। भाषा मर्डिजिन क् यिश्र

30

জशेश्वास वक्ति (जना मिना जिश्र , (भाः जाः পাত্তলা

প্রতাপনারায়ণ রায় ধানোয়ার গিরিডি क्डनाइन

मधुखनन उन्त्र शंखा जाडेड भिनित त्रिकामिन क्षित्रो वानित्रामि छोक्। (मीनवी मस्मान व्यानीया व्याष्टिमा मममानिश मन २२४० माल २०० रेवमाथ, ब्रम्मि छिवात।

यूवबांदिक ब जाविक मर्गानिव कल।

मञ्जि (ডिलिनिউ।मत लखनश्र मश्राप्तार्थ) लिथि-য়াছেন যে, যুবরাজ ভারতবর্ষে যে অসংখ্য উপহার প্রাপ্ত হইয়াছেন, তাহাতিনি নিজে গ্রহণ করিতে না भारतम इहे जन मजा भानि शारापे এই প্রস্তাব উষাপন করার সংকল্প করিয়াছেন। কুইন বিক-तिया यथन (म मिन जर्जानी गंगन करतन उथन াঁহার প্রজারা তাঁহার কৈফিয় তলব করে ও তাঁহাকে জিজ্ঞাদা করে যে, তিনি কোন্ নজির गरमादत পालियात्यकेत छे भदिमान काल यदिमा শরিত্যাগ করিয়া অপর রাজার অধিকারে গমন बातन? डाँशांत " এस्थिम व्यव देखियां" डेशांवि रश ७ इंश्न ए भरा शान योग डेश छि इरेश ए । शहेम जाव लर्फ अक्सरम देश लहेशा जूमूल मः थाम व उर्क वि उर्क या इ एक एक । लू रे (न भी लिय़ान जिशे अ विখ্যाত ও পূজনীয় ছিলেন। ইহার বাহু বিক্রমে ও वृिक वरल कान्म इडेरतार भत्र मर्खा मर्ख व्यष्ठ भन्गीर देशनी उ इय़, किन्छ जिनि (य युएक श्रां किं इरेग़ा एइन লার ফরাশিগণ ভাঁহাকে দেশ হইতে বিতাড়িত করিয়া मिल्रा जिनि इंश्लिख जाखा लन ७ ज्थांस श्रांत मृज् रहेला जाहात ता छोत गांजालकात विक्य कित्रिया ठाँशत जीवन निर्माश कितिए रहेशा हिल ववः डाँशत পूज वधन उ इर्मणाश्वि इरो नगना व्यन-श्रात्र मिन याशन क्रिटिण्डन। विम्यार्क्त वृिक वर्ल थिनाश এখন পৃথিবীর মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ হইয়। উঠিয়াছে। ग वाङि (मट्नंत এक्तर्भ डेशकांत करतन, डाँशक मिनवामी(पत (पवण) विलया शृका करा। कर्चगा। किन्छ विभगकि किक्रथ ভয়ানक অवश्वाय जीदन याथन कित्-उष्ट्न! उँ। श्रांत ভয়ের मीया नाई। তাঁহাকে महमा शल कतिया एकर ना गादत धरेनियल बारशतर াহার শরীর ধাতুনির্মিত বর্মা দারা রক্ষিত রহিয়াছে, निकाल डाइ। इर पछ निजा यारेवाय माथा नारे, ववश् भाग वात विद्या ना कतिया भत्रम वाश्री यत अपछ কান আহার্য্য দ্রব্যও গ্রহণ করিতে পারেন না। কশি, সমাট এক জন অদ্বিতীয় লোক। তাঁহার বুদ্ধি े अकिनात्रा, व्यिनातात नगरीपष्ट श्रेता डेरिवाटि । উহির আপাতত কি হুর্দশা উপস্থিত। তিনি প্রশিয় उ इश्लिम ग्वर्गिरालेत महम कर्यक जी विषय मिक्र क्रिया इहेत्रा छिठि, এदः এখন छना याहेट ए ध्याता

স্থাপন করেন। ইহাতে প্রজারা তাঁহার উপর বিরক্ত र्य। প্रজারা এই কয়েকটী मिक्ति ভঙ্গ করিতে তাঁহাকে অমুরোধ করে। তিনি ধর্মভীত লোক। ইহা ভঙ্গ ডিসরেলী সাহেব যদি এ কথা না বলিতেন যে, মহারা-कतिए असीकृष्ठ इन। এই অপরাধে ভাঁহার পুত भशास डाहात भक रहेशा डिटिन। थथम डाहात जीवन ভাঁহাকে সিংহাসন্চ্যুত করিয়া তাঁহার পুত্রকে সিংহা मत्न অধিরোহণ করাইয়াছে। তিনি প্রায় বন্দী অবস্থায় আছেন।

ভারতবর্ষ প্রাধীন। এদেশে ভিন দেশীয় রাজা थंड दे करतन। विशासन याका खिकां ये कि मम्म डाहां बला ना बला जुला। जदब धर्थात्म आया मिन मिन अक्षी পরিবর্ত্তন দেখিতেছি। ভারতবর্ষে পুর্বের পুত্রের ত্তপর পিতার অত্যন্ত প্রভ দ্ব ছিল। শিস্যকে গুৰু দাস ज्भ गत्न कतिएजन। जाभी खोरक जीज वस गरन জমিদার মনে ভাবিতেন, তাঁহার স্থার क्षांडा छोदारक रुधि कतिया हिन। किन्छ ग्वनारे। कलितं आविडाव रख्याद

मिरे क्रथ প্रজात निक्रे निक्षाति कर्म क्रिति वाथा। পিতা পুত্র, স্বামী স্ত্রী, প্রভ, ভূত্য, গুৰু শিদ্য ইহারা मकरलई পরস্পরের নির্দ্ধারিত কর্ম করিতে বাধ্য यिनि তাহার কর্ত্ব্য কর্মে তাচ্ছিল্য করেন তিনিই অপরের নিকট তলিমিত্ত অপরাধী হন। স্থতরাং পূর্বেষ ফাহার। গুৰুজনকে দেব দেবীর ন্যায় ভক্তি করিত এখন রাজ দর্শন কি পিতা ও প্রভু দর্শনে তাহাদের মনে দেরপ ভক্তি জোত প্রবাহিত হয় না। এখন মত্ত-वात खडावनिहिड खाधीन डाव मिन मिन थ्रवन थ्रडा-পাन्ति इरेग्रा डेठिए एह, निः यार्थ (थ्रम मश्मात इरेड ক্রমে অস্তহিত হইতেছে, নাস্তিকতা ক্রমে জগত আচ্ছন कतिराज्याक, अभन कि, लाक नेश्वरतत जाखित्र शर्याख वार्थनात चार्थत छेथत निर्जत कतिया मीमाश्मा करत। इहेश छेठिशा एक, जथां ह हश्तर जाता विश्वाम करतन (य युवताक ভाরতবর্ষে আগমন করিয়াছিলেন শুদ্ধ সেই नियिख ভারতবর্ষবাসীদিগের হৃদয় রাজ ভক্তিতে পরিপ্ল'ত হইয়াছে।

युवताक ভात्र वर्ष कि উদ্দেশ্যে আগমন করেন ইश জানিবার নিমিত্ত আমরা বিশেষ কৌতুকাবিষ্ট হই। ইহা অবগত হইবার নিমিত্ত আমরা কত যত कति, कुछ देश्तािक मदाम পত পाঠ করি, কিন্তু কিছু তেই আমাদের এই কৌতুক তৃপ্তি হয় না। मञ्जाि পেলমেল গেজেট লিখিয়াছেন যে, যুৰরাজ ভারতবর্ষে णार्गमन कर्ताय अपनिगीयिपिरगंत स्पाय ताक जिल्त প্রবল প্রোত প্রবাহিত হইয়াছে। ম্যাঞ্চেটারবাদীরাও लर्ड लिंग्नेतिक এই कथा वल्लिन। विधाञा कतिरञ्न य ইংরাজ জাতির এই বিশ্বাসার্ট প্রকৃত হইত, কিন্তু তাহারা इंश विश्वाम करत्रम ना। এর প विश्वाम शांकित्न ना छेक অভিনয় সন্বন্ধে কঠোর আইন প্রচলিত হইবার প্রস্তাব इइंड न', इंखिय़ान (लिज़िट्सन वित्र ७ (श्रिमिएफ्मी या জिएक हिल विधिवक कतिवात छेए । ११ इडेड ना, স্ত্রাং যুবরাজের ভারত্বর্ধে আগমন উপলক্ষে যদি আমাদের প্রকৃত রাজ ভক্তির উদ্রেক হইয়া থাকে তাহার ফল ভোগী আমরা হইতেছি না। আমরা রাজ-ভক্ত ইহয়াছি বলিয়া গ্ৰণ্মেণ্ট আমাদের প্রতি পূর্বা-(পকা मन्य इन नाई। আমাদের প্রতি তাহাদের পূर्वा (পক্ষা मत्पिर्व शाम श्र नारे। তা शांता करोत শাসনের শিথিলতা করেন নাই, প্রত্যুত ইহার রদ্ধি श्रेशां ए ।

যুৰরাজের ভারত দর্শন উপলক্ষে দ্বিতীয় উপকার এই হইয়াছে। মহারাণী "এস্পেদ অব ইণ্ডিায়া" উপাধি গ্রহণ করিয়াছেন। ইহাতে ভারতবর্ষের উপকার কি वाशकात - इहेर व जाहा विधाजा जारनन। किन्छ या पिन অवधि মহারাণীর এই উপাধি শ্রহণের কথা উঠিয়াছে (मई দिन অविधि আমাদের মন চিন্তাকুল হইয়াছে। ণীকে "এম্প্রেদ অব ইণ্ডিয়া" দেখিবার নিমিত্ত ভারতব-र्घवामीश्रेश व्याकूल इइया ছেন, তাহা इह ल আমরা इहात निमिज এত চিন্তাযুক্ত হইতাম না। তিনি य দ এ কথা ना बिलिएन, य युवताक्रिक ভाরতবর্ষবাদীরা অতিশয় यु कर्त, यश्तानी देशाट जात्रवर्षवामी पिरात डेপর অতিশয় मन्छस इहेश। এই উপাধি এহণ করিতে-(इन; यिन महातानीत এस्थाम डेशाधि अहरनत कथा श्वित्रा देश्लखव मीता उँ कि कि क ना इंदेर के , कि बाता ভারতবর্ষ আক্রমণ করিবার উদ্যোগ করিতেছে এই निभिज्ञ यश्तां अल्लाम उलाधि अश्व क्रिलन जिमदाली धरेकथा विलिया এट्याम अव रेखिया छेथा-थित महिम यि मिश्शत यूर्जित जाव मशिल मा कतिएका, তাহা হইলে আমরা ইহার নিমিত্ত এত ব্যাকুল হইতাম (য়, আম জনশূতা। যে স্থানে পূর্কে এক শত পরিবার না। ভারতবর্ষবাদীরা মহারাণীকে ''এস্প্রেদ অব বাদ করিত দেখানে হয়ত একটা মাত্র ইতিয়া "দেখিবার নিমিত ব্যাকুল হইয়াছে এ কথাটী করিতেছে, আবার সেও হয় ত त প্রাণ্ডাব্ इওয়ণতে দাসত্বের মুগ সম্পূর্ণ অলীক। "এম্পেন অব ইণ্ডিয়া" উপাধি বারে পুৰুষ মাত্র নাই জার যেরূপ রাজার দারায়দি ভারতবর্ষের প্রকৃত উপকার হইত তাহা হইত जारिक, ताका ज जिमरतनीत अक्रथ इनना कतात छात्राकन कि

जिनि वर्लन (य, यश्तांनी जात्रजवर्षवामी पिरात निक्छे প্রত্যাপকার স্বীকার করিবার নিমিত্ত এই উপাধি গ্রহণ करतन, अथि इशाउ अपिट नित कि छेशकात इहेन णश् जिनि विलित्न न। गश्रातानीत ''এस्थाम जाव ইণ্ডিয়া" উপাধির সঙ্গে সামাগ্র উপাধির তুলনা করাতে यि विभागादित (कान वार्यताथ इय वार्य स्ट्रेल ताज श्रुक्रिता क्रमा क्रित्यम, क्रिन्छ এएए क डेशाधि मयरम ञातक मिन ञाविश लारिकत ভिক्ति शिवार्षि। (य (मिट्नांत लांक व्यानंत यञ्जभांत लांनाविक (म (मिट्नांत लाक्तित छेशांशि विष्यना गाज। य (मर्नित लाकि मश्ताभीत नाया किन्शिं कल्लित (म (मर्भत लिकित "बल्धारमत" नार्य जाभकात थान जाम इहेरव। गरातानीत " अल्लाम जाव देखिया" छेशाधि शह्न पाता व দেশের মঙ্গল কি অমঙ্গল হইবে তাহা আমরা জানি ना। তবে ইহার প্রতি আমাদের বিশেষ সন্দেহ वाष्ट्र थवः यमि जिमदाली मार्व अपमिनीयमिगरक ভাল বাদিয়া মহারাণীকে "এম্প্রেদ অব ইতিয়া" উপাধি দারা স্থাভিত করিয়া থাকেন, তাহা হইলে তাহার अ मत्मिश् मृत कता छिष्ठि ছिल। आयता देशता जिपितात मःशत यूर्जि অপেক। শानु यूर्जिक अधिक ভয় করি। मःश्रात मूर्जिकाल आगत्र। आमन विश्व वृति। सा क्रथ कार्या करित्र थाति, विन्छ जाशापित भाष्ययूर्जित মোহিনী শক্তি আমর। অতিক্রম করিতে পারি না। তাহার। এদেশের যত বিশেষ অনিষ্ট করিয়াছেন সে वहे भा उपूर्वि थात्र न कतिया। ডिमद्र नी मास्य वथन ভারতবর্ষ সমক্ষে এই শান্তমূর্ত্তি ধারণ করিয়াছেন। वामता तमरे निमिछ वादा विश्वक छीउ रहेशाहि।

তবে একটী উপকার হইয়াছে। ইংলগুবাদী-मिरगंत मूर्थ এখন ভারতবর্ষের কথা তানেক ভনা যাই-তেছে। টাইমস প্রভৃতি সংবাদ প্র ভারতবর্ষবাদী-मिर्गित सम्मलित निमिज এখन यज्ञ कितिज्ञ । इंजि शृद्धि जाशात्रा अक्षश कथन कर्तन नाहै। अवश्यमि इं॰ রাজ সমাজে আমরা একবার স্থান প্রাপ্ত হই তাহা হইলে वांगामित डेमंडि वांत (कर् निवांतन कतिएड शांतिष AND THE THE THE THE PARTY NAMED IN

ভজ বংশ রক্ষার উপায় কি?

FRIEDRICH FILM FILMET I FINISH IN FUNDAMEN

श्रुताञ्च इत्कत डेश्यामिका मिकि (कवल श्राम र्य ना, उरात उर्शन कन्छ विचान र्रेया याय। এक (मण्डा भीर्वकाल এक विश्व गमा जिन्मात्व एक जिन्न छे । भा-पिका लिक (करल इभा इय्र ना, उद्भाग नामा उ मर्दाष्ट्रभ्त इत ना। इक लंडा श्राङ्खित शरक य निश्य आभार्षत विश्वाम यञ्चात श्रेटक मह नियम। আমরা এদেশে দেখিতে পাই যে পুরাতন भेख आम ममूनस डेक्ट्रिस भिशाट्ड, পুরাতন বংশ ममूमय नियूल इहेसाएए। এक छान याहाता माउ পুৰুষ বাদ করিয়াছেন ভাহাদেরই ক্রমান্তমে বংশা थात्र नुश उ इत्रकाशन रहेशाइ। এদেশের ভদ लाक्तित इतक्षात अरे अक्षी (वाथ इत बलव कात्। रिश्क वामञ्चान शतिकाश कता अपनिशिविधारी পক্ষে নিতান্ত কন্টকর বিষয়। তাহারা পৈতৃক বাস-शानदक (कर्न अखदात्र मद्भ दिश् कद्रान मा, रेशक्क বাসস্থান পরিত্যাগ করিয়া অন্তত্ত গমন কর। তাহাদের शिक्तानिङा जिलाक्न कार्या। এই निमिन्ड अवश्मी (श्रा शूक्वाञ्चारम এक शाम ज्याशिक करतम এवः मीर्घकाल এक छात्न वाम कतात्र जाशापत विश्वाभाष्य मछि ज्ञान निर्द्धीय छ निर्दिश्य इस। आयर। धर निमिख कान जम शली ग्रांत्य थात्न कतितल रे पिथ

किया वार्षियात्म अनक्ष्मीत पृष्टि न। शिष्ट्रियाद्य। वशन प्रभाग शानि शही आर्य ज्यन कतित्व वक्षी छक्त नशालात जित्रकि (प्रथा यात्र ना। छक्त वश्रान्त अहै। ছাৰণার অনেক কারণ থাকিতে পারে, কিন্তু ভদ্র यश्की य मिर्गात मीर्घकाल এक স্থানে অवस्थि कर्ता य এই হুগতির কটী কারণ তাহার কোন ভুল নাই। (य निनीतं जांड कन्न इय मि निनी जन मगांजित . উপকারজনক না হইয়া প্রত্যুত বিস্তর অনিষ্টকর হয়। मगाद्वां अठल अवशा अरे क्ष अनिम्केकत । आगा-(म्त् जेहे नियाम (य, এ দেশের অচল সমাজ কোন शिष्टिक छेट किंड कर्तिए भारितल আমরা অকাল गुड़ा इडेटड शतिजान शाहेडाय। (म्द्रमं जर्धत खम्ह-लंडा थाकित मयाज जी यस थारक, माती तिक स्था थाकित्न जीराख थांकि, गांनमिक सूथ थांकित्नड नगाज जान्ज इंड्रा यात्र ना। किन्छ निर्धन्ता, अञ्च-ख्छ। अ यानमिक कछ अ मम्माय आया मिगरक मिन দিন ভাভিভ ত করিতেছে, আবার তাহার উপর এই वात निमित्र कथन कथन आभार्षित देखा एत एत ध (मर्ल काम क्रिश এक ही विश्व डे शिश्व इहेड, कथन रेगोरेक छेर कि कि कि कि कि कि से कि कि कि निकार कि

म अक्री सांचाविक डेशांस आह्य। এই डेशांसी भनिद्वा भागन । इक छान श्रिवर्डन शूर्वक यानि ভর লহিত রোপাণ করা যায় তবে দে রুক্ষ সতেজ হইয়া । शासात होता स्थानास्त कतिया (ताशन कतिरल एकांड कल वर छ (। (थर्ष रहा। (य हिंग भी सिता क वस बिजय़ी श्हेयाष्ट्रिलन, य देश्ताजिपिरगंत विक्राय आगत्रा त्रां जि मिन मणक्डि, (य आंत्यतिकावामीता अथन वृक्षि विष्णा विष्णान ठळी প্রভৃতি দারা সর্বাতাগণা হইয়াছেন देशतां मकल्लरे डेलिनिटवणी। आग्राता (य आर्था वर्णत এত গৌরব করি তাহারাও অপর স্থান হইতে ভারত-बर्ध छेशिष्टिङ इहेश छेशिनिदिन छाशन कद्रम। व्यायादम् त डेशनिद्वाला त डेशका ति मर्गन कतिवात निमिख जार्शत (मर्ल शंभन कत्रांत প্রয়োজন করে न। আমর। বাজলায় ইহার শত শত উদাহরণ मिथिए शाहेर जिल्ला वाकाला अथय शिक्य इहेर ज शौं ह जन बामान अ शिं ह जन का श्रष्ट आग्रामन करतन। णशित পর আর তিন জন কায়স্থ আইদেন। এই करमक জনের অশ্প দিনের মধ্যে এত পরিবার হৃদ্ধি इय (य थाय वाङ्गालात मर्वव छाश्ता बाङ्ग कर्तन, অধুনা যে সমুদয় নগর বাজার স্থাপিত হইয়াছে সে ममून्य প্রশিদ্ধ হইয়া উঠিয়াছে। ঢাকা,মুর্লিদাবাদ প্রভৃতি श्रीतांजन नगरतत श्रीत्व (य जाशां जायिक धन ७ जन मःशा हिल, शृदर्व (यथान मञ्जास लाक व्यविष्ठि कति उन कि अधिक वाणिका वावमा इरेड, अथन (म-

बश्या (मथार्न व्यात्र व्यथान रहेता

च कृषि थाजामित्रांत बश्ण

করেন তাহা হইলে তাহার। ভূতন স্থানে গমন করিয়া मटिङ इहेर्वन ७ हेरात दाता आगामित अवन मगाङ मजीव इहेशा डेठिरव। आभार्षित अर्थत (मर्ग गंभन कतिया डेপनिर्वण स्थापन करा এक क्रथ जमाधा व्याशात, किन्छ ভারতবর্ষ একটী কুদ্র দেশ नहर। ভারত-বর্ষকে একটা মহা দেশ বলিয়া তত্ত্ব পণ্ডিতের। বর্ণন ছেন ভাহাদের বিবাদ হইতেছে। কিন্তু ভাহা कर्त्रन। वाङ्गाना अ यथा ভात्र वर्ष এक (पन्न नर्ट्, পশ্চিম অঞ্চলত এক দেশ নছে। আবার ভারতবর্ষে একটা কথা দারা প্রকাশ হইতেছে যে, গ্র विख्य साथीन ताज। আছেন, তাঁহাদের রাজ্য শাসন প্রেরিড লোক্যাণ তাহাদের অন্নের হন্ত व्यगाली जाना क्रथ जवर जानक जाकात कामन जवर ज्ञीमज जाकात्र। जर क्रथ विवाप व्यगानी मंडा मा इहेल अपनिशिमित्गंत शंका जागापन वित्वनाग गंवर्णमण्डेत नागा অপেক্ষাকৃত অধিক উপযোগী হইতে পারে। আমরা গোলোযোগের বিশেষ কারণ অনুসন্ধান কর यत्न कतित्न এই जात्र जवर्षत छात्न छात्न गमन कतिया। यिन उ इ छ त्राभीय जाजित्र। जमजा जाजित्र উপনিবেশ স্থাপন কবিতে পারি। এখন ভারতবর্ষের কৌশলে নিমূল করা পাপ কি অন্যায় मर्वाव गेमनाभेमन कर्तात आत (कान वाथा नाई। करत्रन ना, यान अडेएताशीय कां जि वई कल আবার ধন উপার্জন ও অন্যান্ত নানা কারণে ভারত- নানা দেশ হইতে আদিমবাদীদিগকে নিমুল রূপ দীবকাল এক স্থানে বাস। এই সমুদ্য় নানা বর্ষের প্রায় সর্বত বাঙ্গালী গমন করিয়াছেন। স্থতরাং তাহারা তাহাদের স্থানে অবস্থিতি করিতেছেন কারণে ভদ্র বংশের মধ্যে যে ভয়ানক বিষ প্রবেশ এ দেশীয়েরা উত্তর পশ্চিম অঞ্চলে কর্ম উপলক্ষে গমন করিরাছে তাহাতে বোধ হয় অচিরাং আমাদের নিযুল করিয়া অনেকে এই রূপ অবস্থিতি করিয়াছেন। इंड इंड (व) अई आमन क्षलग्न इंड जिन श्राहर विन श्राहर वाम कित्रियो हिन। ইशामिगारक यिनि দর্শন করিয়াছেন তিনিই এই উপনি-(वटणंत डेशकांत्रिङ। खीकांत कतिर्वन। (मथान (य ममू-मय वाक्रा वाक्रिक कविटिक किर्मिक किर्मिक

में में अभी अपने अतिहरूको। किन असमें जिल्ले असमें उन्हें स्ट्रिंगिट्स १ वि माण्य वाषानियाँ आपर পারবভনের শেল আনাদের প্রবল স্থাজ সহ্য করিছে দেশে গমন করিয়া একবার অবস্থিতি করিয়াছেন শারিকে কি না তাহা আমরা জানিনা। অস্থাতা- তাহাদের আর এদেশে আগমন করার ইচ্ছা থাকে না। বিক মৃত্যু অপেকা স্বাভাবিক মৃত্যু কর্ত্ক মন্ত্রা তবে তাহারা সমাজের অনুরোধে এদেশে গ্রম মণে যাতনা সহ্য করে। আবার আত্মহত্যা মহা- করেন, স্কুতরাং যদি বাঙ্গালীরা এই সমুদ্য স্বাস্থ্য-পাপ। এই নিমিত্ত এই রূপ কোন অস্থাভাবিক কর দেশে গমন করিতে ইচ্ছা করেন ভাহা হইলে ত্তজনা করিতে আমাদের ভয়ের উদয় হয়। কিন্তু তাহারা ইহার বিশেষ স্থবিধা করিয়া দিতে পারেন। তা বংশকে এই প্রবস্থা হইতে উদ্ধার করিবার বোধ অনেক স্বাধীন রাজা হয়ত আহলাদ সহকারে আমা-मिगटक जाशदिन तार्का वाम कताश्वम। (य कार्या ইচ্ছা হয় তাহা সম্পন্ন করার স্থবিধা আপনি আসিয়া উপস্থিত হয়। यদि বঙ্গবাদীরা উপনিবেশ করিতে श्रित मङ्ग्रा इन जाहा इहेटल जाहाता मकल वाधाह উल्ख्यन क्रिंडिं श्रीतिर्वन।

रम रिप कि विक्रिकारिय के विक्रिकार के विक्रिय के कि कि कि कि विक्रिय के विक्र

शां अनियादिय थक अन मयाममा । निथियादिन (य, नाशा श्वर एक यादात्रा कि द्विश कि त्रिएक शिताएक न তা रात्रा काटम काटमात्र श्विधा कत्रि তে हिन। धारा हरे जिन महत्य वर्ग माहेन জित्रिश इहेत्राट्छ। याहात्रा জित्रिश कत्रिट्ड शिशाट्डन डाइश्वत अथन्ड शदन शदन विश्व व्याभारका क्रिया कार्या क्रिया क्रिया इंट्रेट्ट्रा ज्राह्य रा (कानर आध्य डेशश्विड इरेल आया लाक डार्-टमत थां जानातात कतिवात ऐताम कदत। व्यत्नक ममग्न अरे निमिन्न विवान छेशश्चित इत अवश याश्रात्रा कतिथ कतिएक शियाद्वन जाश्रा वन्यूक षात्र। তাহাদিগকে শাসন করিতে বাধ্য হন। কোথায়২ आम পर्वा ख ख्यो जू कि विद्या जा शामिश कि ममन कि विद् इस्र। धक अभस क्राभिट्रिन बहेलाद्रित नागस हिल माद्यदक्ष नाशांत्र। इणा क्रिकात ऐ(मार्श क्रित्र। थक मिन शिथ जाटश्व में। जाशेशो जाट्य हेकि मध्य महमा थक जन नाथा शेका ९ फिक १६८७ जाइ। कि वलम ष्वात्रा व्याचाङ करत्। स्मीङाभा कर्म जिनि जानिङ পারিয়া সতক হন। তাহার শরীরের কয়েক স্থান च्छा याजून वाधाय (य वश्म वाम कति-। धाश इम ना। कतिरात ऐक्या कि वह कितिश काशंदक वदन जाशा नागाना व्रियाट भारत ना তाश्रादमंत्र विश्वाम (य, देश्त्राष्ट्र त्राष्ट्रा जान नाहे जार निकार डेश्वांटियां नागा श्वांड जागमन ान এक छान हेश्यां जिंदक

তোমাদের দেশে কি চাউল নাই, এখানে কি তাহারই निभिछ जागमन कत?' नागना इब छ जा जि। इब इ জাভিদিগোর অপরের প্রতি অত্যাচার ও নিজ্পী कता या जा विभिन्न धर्म। इय ज अहे निभिन्न नारा मद्भ श्वर्थिय या श्वित्र क्रिया क्रिय क्रिय नार्गात्रां এ क्या विलिट्य (क्न या, देश्द्रोज द्रां नाई मिर्च ज्यात्न इंदादा जिम्हाद् আমাদের বিবেচনায় ভারতবর্ষে এরপ নি कर्त्रात्र (कान প্রয়োজন নাই। এ দেশে আদি श्चेवल नर्छ। त्रांखात छे ज्या छात्न छ अई जाि म व्यविष्ठि करत्र ना। जाशता प्रर्शन शर्मा अर्था अ অবস্থিতি করে। তাহাদের প্রতি অত্যাচার डेश्लिम शंवर्यिए देव द्वांध इय कान लंडा नाहे।

मुक्त हार्ड विकित मान । जान

शारे देशनाउ जी जनभारन वर्षा निर्दे

नंद (तांक कुट्रा धारम शक्रिक इस, किन्छ

जिल्ला (कर हिल्ब जल निः किश कर्त्रन न। १ करिं। त्र भागत्म श्राज्य श्रिक्टर्ड कड लाक्त्र भाविद्या मकल जाना नम इहेट्ड्र, जारात्र क्टि हिक्त जन निः किन करतन न।। त्रांज मर्था ष्यांन मर्खन्न विधि थाकार्ड कड भंड ह वाङ्कित जनर्थक लाग नम्छे इहेट्ड्ड्, जाहात निमिन्न কেহ বাস্ত নহেন, কিন্তু পশু পশ্লির প্রতি কোন क्रिश निष्ठं ब्रां ठवर्ग ना इश हेश नियावर्ग क्रिया क्रिया ञाटनदक्तं প्रांग প्रशांख भग्। ञार्यात्र याश्रे शकोत প্রতি কোন রূপ নিষ্ঠ রাচরণ হইলে উ করিতে পারেন না, তাহারা হয়ত মনুযোর কঠোর রাজ দও প্রদান দেওয়ার নিমিত নিতা मील। পশু পক্ষি উপায়বিহীন, আত্ম কয় করিতে পারে না, তাহাদের প্রতি স্বভাবতঃ নুমা इरेट शाद्य, किन्छ याश्या शन्त व्यन्ति এই ज्ञान निर्म् द्राप्तर्ग निर्माद्र जिल्ला जिल्ला जान्त তাহারা হয়ত প্রতি দিন আহারের নিমিত্ত কত প্র शिकि इजा कद्रन। जाश्री इग्रज जारनन (य शश शिक्त जीवन অशिका मनू सात्र जीवन अधिक প্ররোজনীয়, স্তরাং অধিক প্রয়োজনীয় বস্তা পোষ ণের নিমিত্ত অপেকারত অপে প্রয়োজনীয় বস্তর श्रुण कितिएन जिशिए व जिल्ल निष्ठ इस ना। किन्छ श्रुण অপেক्ষা यमि रञ्चात जीवन অधिक मूलावान ए। इरेल अखडः श्रेष्ठ शक्ति । अधि । इइटल (यक्तश यज (पर्शन इज्ञ, निक्शांगी य প্রতি সেই রূপ যত্ন দেখান কর্ত্বা।

गार्क्छत्रवामी मि:शत ''(ठशात ज्य क्य नागक मञात मणा जि धकती विल्यं जिश्वनान वरखन डेशन खलक मन्दन श्रेम जाव लर्डम विष्कं इय्र ध्वर खात्र खात्र व्यवि ए मः का ख यि मिनि हे लि दथन, (मई विश-लिङ इয়। সভ্যের। এক মত लिशिवज्ञ कदबन। " (सिंहे शालक निका प्रशं अश्वतक न তोश शांठ कित्रमा पाई शदव लिस्डि त्मत उदमन अथादन जाहेम, मिटल ভार

### THE AMRITA BAZAR PATRIKA.

CALCUTTA, THURSDAY, MAY, 4, 1876.

Intelligence has reached us from a source, which we cannot descredit, that the Bengal Iron Works Company are getting good pig iron from iron ores smelted in blast furnices. If this information be rrect, then it is one which ought to gladden the heart of every native of India. India, though so rich in iron ores, was never thought capable of producing pig irons so necessary for the development of the manufacturing resources of country. Attempts were made at different periods by able experts to manufacture good iron from Indian e ores, but they invariably met with failure. It was however left to Mr. Whitelaw to open this new source of wealth to the people of India. In s gentleman comes from Scotland and is the manager of the above Company. If his success is as real as it is reported to be, he will deserve a golden monument at the hands of a grateful nation.

Sir John Strachey did not realize the position of the "Court" when he administered a severe rebuke to the Assistant Migistrate of Allyghur for bringing the administration of justice into contempt." The Assistant Magistrate thus delivered himself in a case in which he was himself a plaintiff, and Pachua defen lant:-

"Pachua is hereby charged with having, on the 11th January, followed the court on its rising, and while the said court was in the act of mounting its buggy, came from behind, and seizing the court's dangling leg, the other foot being on the step, forcibly pulled back the court, frightened the horse, and nearly caused an accident. The reason alleged for this by accused is that he wanted to hear the result of an application of his. The practice by petitioners of pulling the courts by the legs is one which should be discouraged. Accused only says he is a poor man, admitting the truth of the complaint. He is sentenced to one mohth's rigorous imprisonment."

It is to be hoped that the practice of pulling the court by the ears is qually distasteful to the Assistant Magistrate, and that His Honor's use of it on this occasion may suffice to prevent the necessity for a second application. We take the above from the Pioneer.

---000---

A copy of the following letter of Mr. Secretary Reynolds to the Director of Public Instruction has been sent to the Hon. Secretary, Indian League:

"With reference to the Resolution of the Lieutenant-Governor, No. 279, dated the 1st February last, in which you were requested to submit a scheme for carrying out the objects of the endowment Established by Rai Luchmiput Singh Bahadoor, I am directed to inform you that the Lieutenant-Governor understands it to be the wish of the donor that the amount should be applied to the support of the technical school which is about to be founded by the Indian League, and His Honor has been pleased to assent to this appropriation of the fund."

The Resolution of the 1st February was the result of a misapprehension. The mistake occured in is wise. While Roy Bahadoor Luchmiput ade his donation to the College founded by the eague, he at the same time wrote to the Governent giving the information to the authorities. In he usual course of business the letter of the Roy Sahadoor came before one of the Secretaries, who aving no further information on the subject wrote he Resolution which Government at last found necessary to correct.

----Regarding the recent Lord Northbrook meeting he Indu Prokash says:-"Our readers must emember the incident of a few persons putting an amendment to a Resolution that was about to be passed by a public meeting held in Calcutta to consider the best way of perpetuating the memory of Lord Northbrook's administration. The Tindoo Patriot, who has always exhibited such Itense admiration for the abilities of Lord Northbrook, has undertaken the task of publishing the names of the ten persons who seemed to support the amendment with what motive we do not know. We do not see why the Patriot thought the Ten would be put to shame by or have reason to fear the publication of their names in connection with this matter, when they had most considerately done the act in a public meeting. Notwithstanding all the strange conduct of the Patriot, however, the putting of the amendment shows the disagreement of Calcutta. The Indian League seems to be in Lavour of the amendment, but did not put it itself fearing, it seems, a defeat as many people would not naturally venture to support them in such an invidious task. We have seen elsewhere that Bombay is on the side of the Ten."

The following sentiments from the Saturday Review agree so exactly with those expressed by us some weeks ago that we make no apology in reproducing them :-

At the present moment the Queen's subjects in India must be taken to be included among those persons over whom she rules as Queen of

Great Britain and Ireland. To take the Indians out of this class would be, according to Mr. Disraeli, to put them in a separate and lower class. It is quite true that we, in point of fact, do look on the natives of India as a lower class than colonists of English descent, and it is now proposed to record this prepossession. The preference for the title of Empress over that of Queen is quite in accordance with this view. We should think it going down not going up, if our Queen called herself an Empress. But Empress is thought just good enough for India. It conveys with it a sort of contempt disguised under the show of a compliment. It is supposed to be likely to flatter the vanity of native princes, and it is thought to be calculated to inspire a delusive but pleasing belief in the personal power of the Sovereign, while at the same time it records the fact that India is a conquered country. Empress is in every way a lower title than Queen when applied to India, for it is a word despised by the governing race, and thought specially suited to the governed. When an occasion presents itself for making the intimate connexion of all the Queen's subjects with each other, it seems scarcely worth while to stamp upon a portion of them this mark of inferiority."

Thus the present ministry seperates us from the constitution by one stroke, and no opportunity was given us to express our views on the subject. That claim of ours to be treated on equal terms with other British subject is thus constitutionally ignored, and our patriotic brother of Kansaripara comes forward with indecent haste to congratulate the Queen on her assumption of this title! He had not the patience to wait till the terms of the Proclamation were made known, he was afraid lest any body anticipated him in his expression of loyalty! We cannot too strongly express our disapprobation of such conduct in a journal which pretends to represent public opinion. Fortunately for the reputation of the Indains as an intelligent nation, the Titles Bill was hurried through the House before Indian Public opinion on the measure could reach England, or the expression of our contemporary might have been taken, by interested parties to our eternal disgrace, as representing the opinion of the Hindoos, and an additional reason cited for passing the measure. We are not less loyal than our contemporary because we object to the title of Empress. We are loyal to British constitution

and not Anglo-Saxon despotism.

The Hindoo Patriot has the following: -

"Both the Indu Prokash and Native Opinion find fault with us for giving the names and designations of the "immortal ten," who disturbed the Northbrook meeting. In the first place we may mention that the names and disignations of the leading men among them were given in the report of the meeting in the morning papers, and we simplý completed the list. But we appeal to our contemporaries to say whether those who publicly came forward to play the part they did need feel ashamed of the publication of their names. The morning papers however reported more which we did not think fit to reproduce. As for the general opinion among the native community regarding the conduct of the "ten," the sense of the meeting, the opinions contained in most of the Bengal papers, both English and Vernacular, and last though not the least the vote of censure passed by the League afford sufficient proof, and we do not think that we would have acted faithfully as an exponent of public opinion if we had omitted to advert to it. Our contemporaries are quite mistaken if they think that we noticed the matter from any feeling against the League. The good of the country ought to be our common object, and as union is strength we ought to sink minor differences of opinion for the advancement of the object. That the League does not command the confidence of all is a matter of regret, and that we do not make a gratuitous statement will appear from the following extract from the National Paper."

If the 'ten' disturbed the serenity of the meeting it was owing to the false move of the promoters, who invited the public by an advertisement. When they saw that matters were gradually assuming a serious aspect, they immediately confessed they had nothing to do with the public and they had only invited the admirers of Lord Northbrook. Fortunately they took protection under the Presidency of Sir Richard Temple, or the result might have been what they little anticipated. The League passed no vote of censure upon the members of the Council who took any part in the meeting. Malicious people tried to connect the League with the action of the "ten," and the League disclaimed any privity or connivance in the matter. The disgraceful action of the majority who took the law in their own hands and used such ungentlemanly epithets as "turn them out" "kick them out," and the courage and patriotism of the 'ten' have been universally noticed. English and native papers, Bengallees and Bombayites have expressed one opinion upon the subject. It is a deliberate misstatement that most of the Bengal papers have disapproved of the conduct of the "ten." If it is necessary we can give a list. Our contemporary is very sorry that the League does not command the confidence of the public and sheds a flood of tears over the matter. If the fact pains him, why is he so very anxious to give it publicity and try to prove it? He quotes the National Paper, but he very well knows that the Editor of that paper was expelled from the Council of the League for conduct unworthy of a member of that body. From the establishment of the League our contemporary has never declined to make use of any art, however mean or unpatriotic, to throw dirt upon that body.

He ferrets out passages from obscure newspapers, containing attacks against that body. He tries to foment internal dissensions forgetting that, those who could form such an organization in the metropolis of the Empire can also defy his puny efforts in that direction. He is always picking holes, now asking how was that money raised and so forth, and why was the date of a certain Resolution of the Council of the League omitted, &c. &c., not having the common sense to understand that it is of little moment how the money was raised provided it was raised and put in the custody of the League. He has even gone to the length of abusing the Chairmin of the Council. But these are small matters when compared to the following outbursts of our contemporary. Was it not our contemporary, the great frient of the League, the patriot par excellence of India, who urged the Government to throw Luchmipit's donations into water rather than make it over to the Albert Temple of Science? Was it not the same patriot who expressed sorrrow that the Government mide over the entire control of the Albert Temple of Science to the people without retaining the control in its own hand? Our contemporary does not know one fact and we shall enlighten him. It was on that condition alone that the grant was accepted. The Leaguers would have never accepted the liberal grant of Government burthened with any condition.

Hitherto our attitude has been always one of defence. We have never attacked the British Indian Association, for there are members in that body who command our sincere respect, and it is not our policy to foul our own nest. The result of this forbearance is, that our contemporary is always picking holes and doing all he can to bring the League into disrepute. The League has succeeded in spite of him, and he has not the sense to perceive it and to yield with a good grace. The effect of this forbearance on our part would have told differently upon a nobler mind. Our contemporary is always finding fault with the League. Is the British Indian Association an immaculate bour 2 The public has right to see the list of the members of such an influential body, why is not this list published? Has the Association a committee and are the committee consulted? Have the members any voice in the deliberations of the meetting? The Association was the custodian of certain public funds; may we inquire what they have done with them? May we also inquire whether they have any account of the sum of 70 or 80 thousand rupees, subscribed by the public and spent by the Prince of Wales Reception committee? Will they publish the account and silence certain ugly, though no doubt unfounded, rumors? May we also inquire the number of persons present at the annual meeting of the Association which took place the other day? Was not the number only seven inclusive of the office-bearers? A few more queries of a different niture and we have done. Why was no step taken to arrest the introduction of the Criminal Procedure Code by that body? Is it or is it not a fact that the road-cess upon the peasantry of Bengal was imposed at the instigation of the British Indian Association? Was not the Majority Act, so disastrous in its consequences, introduced with the approval of that body? To speak in the language of our brother "we have no feeling against the Association. The good of the country ought to be our common object and as union is strength we ought to sink minor differences of opinion for the advancement of that object. That the Association does not command the confidence of all is a matter of regret and the above facts will shew that we do not make a gratuitous statement" when we say so.

-----DEPRECIATION OF SILVER. -- Mother earth is giving up so much silver of late that our rupee is gradually losing its value. Now, had we no con cern whatever with other nations this might have not troubled us at all. But since we must have dealings with other nations, sell our grains, and purchase cloths, this fall in the value of silver concerns us deeply. We cannot now introduce a gold currency, for where is the gold to come from? We must purchase it, and we must purchase it with silver which has fallen in value So this is no remedy at all. The question has however puzzled the brains of the profoundest economists of the day and it would be simply presumptuous on our part' to offer any solution which has baffled the ingenuity of such men. Yet let us examine what effect this fall in the value of silver has upon our immediate interests.

We have to pay a tribute of 12 crores of Rupees in the shape of Home charges to England. But our Rupee has lessened in value in European markets, so the consequence is, we have to send a crore and half or thereabouts more to make up the loss. Here is a difficulty which affects us deeply. This difficulty might be obviated in two ways. Either by reducing the expenditure or borrowing the amount in England. Government will be compelled to adopt one of the above methods if it finds difficult to raise money by taxes to meet the loss. Another loss that we are likely to suffer from this depreciation, is the decrease of our exports. But it is extremely doubtful whether the decrease of our exports will increase the poverty of the nation.

We export raw materials and grains—and in ex. change get cloth and articles of luxury. No nation ever prospered which exported grains, indeed all wealthy nations import them. It would be better for us, if our export trade in grains were destroyed and the energies of the nation directed to more Jucrative occupations. When India was wealthy it never exported grains. Those who export raw materials allow other nations to drain their country of its wealth. There are countries no doubt which though wealthy, yet export raw materials, but they at least retain enough of them to meet their own requirements.

There are other minor losses which we are likely to sustain. For instance, Indians may find England to be a more expensive place than it was. But we expect also many advantages from the same cause. We expect for instance the Manchestrians to give up their contest with the millowners of India. The British merchants were incurring heavy losses of late to maintain their position. But as silver grows cheaper they must proportionately reduce the price of their commodities. They reached this limit long ago and had recourse to adulteration to make up their losses, but this additional blow will tell very seciously upon their prospects. They prayed for the abolition of the export duties but this same exchange question has rendered the abolition difficult, if not impossible. The financial difficulty brought about by the fall in value of the rupee is the only ground upon which the India Government resisted the premptory demands of the State Secretary to abolish those duties.

It is not Manchester alone, that is suffering, the value of every commodity imported into this country will suffer proportionately. And this is the time for the people of India to make an effort to revive their indigenous manufactures. It will take many many years before this evil is remedied and we hope to see the advantage utilized by our countrymen.

Then again those who send money to England find that they lose a great deal by the process. English residents here come to make money, that being the sole object of their leaving home for such a distant country. They find that living in England has increased in cost and they find it difficult to send their children there to be educated. They take every occasion to send their family home, but they will find it more costly now. They go home to recruit health, they will find it now more advantagous to seek a sanitarium in India. . They take advantage of the liberal furlough rules to go home as often as they are entitled to them, but they will hesitate now and will be compelled to think less of such pleasant trips. They go home after making a fortune, or a competence, but it will take longer period now than before to make a fortune or competence. A few will be compelled to give up their idea of going home at all. Anglo-Indians who are in the habit of sending to England o their necessaries and luxuries will find themselves compelled to use Indian manufactures.

Now it has been calculated that about five millions of pound sterling are thus sent to England by private parties. We have already said that we incur a loss of a million and a half, on account of the Home charges. If this fall in the value of silver had the effect of retaining these five millions in the country, our gain would be greater than the loss, for while we lose a million and a half we retain five. If we could retain only a million and a half, still we would be no losers by this depreciation of silver- At any rate it is extremely doubtful, whether the question has any direct interest with the natives of India. It is a question in which the Government and Anglo-Indians are concerned more deeply

It is impossible for the natives of India to become wealthy as a nation. So long they are subjected to an annual drain from the ruling country, they must live from hand to mouth. They are simply allowed a bare pittance, and the surplus money they create goes to maintain an expensive and absentee Government. When the drain becomes excessive famine overspreads the land and the Government finds itself compelled to pay back with compound interest what it had extorted. We are safe and the question cannot affect us in any way. Government for its own sake must leave us a sufficiency to keep soul and body together. So long we are subjected to a heavy drain there is no hope of our making any surplus. From this point of view also it is not a matter of moment to us whether silver rises or falls in value.

than we are.

This state of affairs has been brought about by unjust dealings with India. India has been weighted with charges which should have been borne by England and the consequence is, we are to send annually a large sum as interest to England. Then money was usually borrowed in England for the requirements of the State Secretary to save the exchange charges. Now this is altogether a profound idea. The idea is to borrow the 12 millions in England and to pay an interest of only say fifty lacs and save thus a crore, as the exchange charges would amount to a crore and a half. This charge is annual and if we were to borrow 12 millions in the first year we must borrow a still larger sum for the following year to meet the additional interest. This would at once utilize the

capital which is lying useless in the hands of English capitalists. We may thus borrow five hundred millions in the course of twenty years, but England loses nothing by the transaction. Not a pice of that money will be brought to India. The interest of five hundred millions may be a very large sum but then we will borrow from

English capitalists!

To-day or to-morrow England must be just, or the punishment is sure to be prompt and adequate-A small fall in the value of silver has been felt by the Anglo-Indians as the sting of a scorpion, an income tax of one per cent rouses them to fury, what must be the sufferings of the people of India to see the money raised by them, by the sweat of their brow, taken out from the country? And does England in any way benefit by this transaction? What they take from us they are robbed by the Americans and other nations. They have become rich no doubt, but riches have their accompaniments. Have not English people deterioted in morality which characterized their forefathers? Have they not become more luxurious, less enterprizing, more averse to go to war, more sordid, in short, has riches increased her power or rendered her weak? The only solution of this difficulty is to do justice to India. India must be governed in India and for the benefit of India, or else whatever money English people might make in this country by a grasping and impatient-tobe-rich policy, will either come back to India, or more probably disapper from their hands to enrich other nations.

LAND REVENUE IN INDIA:—If the peasantry of India were to rise against constituted authority, that authority would find it difficult to maintain its position. Though this is merely a supposition, yet it is not altogether an impossible supposition. On the contrary, it is only just possible. We do not choose to tire our readers or we could have shown by figures that more than ninety-five per cent of the entire population in India are deeply interested in land. The land has to bear this all. If there was any chance of this burden upon land being lessened the prospect would have been less gloomy than it is. But there is no prospect of a decrease of this burden, on the contrary it shews a steady increase. Possibly there may be other causes at work, but the fact is indisputable that landed interest in this country is at present on a very insecure state and a universal discontent prevails throughout the country amongst, those who are directly or indirectly connected with land.

Whatever may be the cause, the symptoms are unmistakable. The symptoms shew themselves either in the shape of a riot or a famine. In Behar, the late drought brought to light, that starvation was the order of the day. The researches of Mr. Geddes brought the same thing to light. But the people of Behar never took up arms, they simply starved in silence. That was an accident however and nobody should calculate upon accidents. Without submitting themselves to this self-sacrifice, they might have turned troublesome and it is starving men that are more to be feared than those who have a bellyful to eat. Neither do we think that people who simply starve are less troublesome than those who commit a riot, for tolerable famine gives a greater shock to the country than a devastating war, But it is useless to proceed further. It will be universally admitted, that if agrarian riots are to be avoided by all means, famines are still more dangerous foes to the prosperity and peace of a nation.

Periodical famines are then a class of definite symptoms which shew that there is a disturbance somewhere in the land tenure system of this county. Agrarian riots are a still more distinct class of symptoms which serve to prove the samething. It is no longer possible to ignore these symptoms. Whether in the jungles of Central India, or the South-Western or North Eastern coasts of India, or in the West, the same symptoms are visible everywhere. The symptoms either in a mitigated or aggravated shape are visible all over the country. Almost half of Bengal is in a chronic disorder, the Zemindars and ryots tighting incessantly. In Poona, though the disturbances were suppressed, there was no attempt to remove the cause of the evil. In the North-West, the peasantry are just shewing symptoms of life and active resistence. In Behar the people are starving and in Oude the tenants fare little better than the Beharees. In Santholia, a second rising was vigilantly nipped in the bud.

Now it is just possible that our vigilant Government may be once taken unawares. Of course the statesmen who rule our destinies, must have thought upon such a contingency. Suppose the peasantry in the different parts of the Empire were to rise at once against constituted authority, taking law in their own hands, refusing to pay rent, carrying havoc all over the country as the peasants of Pubna, Santhalia and Poona did at different periods. Suppose ten millions of ryots wrere thus disposed to disturb the peace of the Empire, we daresay, the Government would find in them a more formidable enemy than the Russians, Burmese or Chinese. In Pabna there were two-lacs of people in arms, and in their mad fury they did a great deal of

mischief. What would the Government do quell such a disturbance raised by millions in a parts of the Empire? It would not do to shoot hem down, for probably their enmity would be directed. not towards the Government but to their immedia. land-lords. To arrest them in numbers sufficient to quell the disturbance would be still more impossible than to shoot them down. Before arresting them Government must find a place to put them in, and a sufficient quantity of food to feed them. It would also be necessary to find a sufficient number of men to make arrests when millions ar concerned.

There is one trait in our national character which is more formidable in its effects than the ferocity of Afghan borderers, or the scientific training of European warriors. It is the power of the nation to offer a passive resistence. The practise of sitting in dharna is abolished by law, but no law can eradicate a deeply implanted feeling. When the Mahomudans of Beneres polluted the water of the Ganges, the law abiding Hindoos, who vastly outnumbered the Mahomudans, without resorting to arms, came in a body by the bank of the river and sat in dharna. Young and old, male and female sorrowfully laid themselves in selent sorrow and blank despair. More than forty-eight hours thus passed away in sorrow and hunger when the Throne of God was moved. Man is man everywhere, and this piteous appeal, this silent sorrow and unparralled devotion must prove irresistible in every clime and to every heart. The English who had then just got possession of this portion of India could no longer remain a passive spectator of this awful scene. Certainly they despised such doings at first and calculated in their minds that hunger would very shortly open the eyes of the deluded mob but hunger affected them not. It was then time to adopt active measures. The authorities came to them, soothed their feelings. calmly argued the matter with them and punished the Mahamudans who defiled their sacred river.

This is a trait in the character of our nation which developes in times of extreme sorrow and danger. The annals of the whole world cannot furnish another instance of patriotism, determined self-sacrifice and indomitable courage as shewn by the indigo ryots of Bengal in 1860. Themselves prisoners before the Court, their wives and children begging from door to door and thrown adrift in the world, their Jammas and every agricultural implement and household furniture sold. their huts razed to the ground by elephants maliciously employed by the planters, they stood unmoved and defiant before the Court. "Will you sow indigo or not" demanded the Magistrate. "No. never!" replied the fearless ryot of Bengal. "Only sow for this year please, and get back all you have lost. You need not sow next year no body will compel you" again urged the Magistrate. "This hand shall never touch indigo seed be the consequences whatever it may" replied the same unlettered ryots. The Magistrate again coaxingly persuaded them. "Will it be preferable to go to prison than to sow a small quantity of indigo only for a year?" The answer is on record. It was recorded in indelible characters by Mr. Commissioner Lushington: "We shall prefer a thousand deaths than touch indigo seed again." The same conditions were offered when in prison, the answer was invariably the same from all. Now we do not here record a solitary instance but one out of thousands, When the Joint Magistrate of Jessore treacherously arrested 49 men, of the tens of thousands who came by his invitation to hear a proclamation read out, the difficulty was not to arrest them, but to select among the thousands who offered themselves to be taken.

It is far easier to shoot the infuriated peasantry of India, if it is possible to shoot human beings. who offer no resistance and on the contrary present themselves to be killed than to make arrests. But the still more difficult feat is to meet the after consequence of such a rising Like Government like subject. The Government lives from hand to mouth, so do we. One year's drought in circumscribed spot brings about a famine which taxes the resources of the whole Empire. One year's miscalculation in opium brings about a deficit. Of the entire revenue of the Empire about one-half comes from land alone. Should such a misfortune befal our country the resources of the Empire from land would be fatally crippled. But the peasantry of India do not raise the land revenue alone, other important items of revenue such as salt, stamp and opium may also suffer proportionately. If such a catastrophe happened, Government could scarcely go on for a week and if by super-human efforts it could tide over the difficulties, it would find itself in a still more difficult position. Such scenes are followed by widespread famines. A formidable agrairian rising would sweep away a considerable number of Zemindars and the entire body of middle classes.

We have, no doubt, drawn an imaginary picture. but that the occurrence of such a catastrophe is possible nobody will deny. By a great many people it is believed that such a contingency is not only possible, but is in store for us at a future period, and a few, who can speak with authority on the subject, are of opinion that such a calamity

is imment. If the last class of speculators /ere correct, it would be more important to sele our domestic affairs than to guard the Afin passes. An infuriated or deluded Indian mo would prove more formidable to the British government than the Russians and more destructive to the middle and higher classes than the sack of India by Nadir Shah or Timur.

The other day about two hundred ryots came from Jessore to Calcutta to lay their grievances before the Government but they were persuaded by their friends here to go back as their Zemindar promised them relief. Weeks ago thousands of ryots besieged the Allahabad Government with a similar object. These are facts which cannot be and ought not to be ignored by a Government under the charge of real statesmen. It is high time for the Government to take a decided step in the matter. But it will be necessary to take the natives of the soil in confidence. It will not do for able revenue officers alone to solve this complicated problem. The problem is deep in itself, but a thorough knowledge of the country is absolutely necessary to grasp it with anything like success. The disease has advanced too far a patch work to avert it. We would ask all who have given thought on the subject to assist the Government with suggestions and facts. We have spent our life in a Moffasal village and we shall not fail to contribute our poor mite to the literature of this momentous question. Sir Richard Temple, it appears, is very earnest about the matter, and we ought to take this opportunity under the auspices of His Honor to settle our domestic affairs. Bombay is also seething with discontent, and to allay that discontent Lord Northbrook's Government poured water upon hot oil by giving them a new Revenue Act: the result is, the oil without cooling is likely to burn in a blaze.

#### SCRAPS AND COMMENTS.

The Pioneer has the following regarding the Deccan College affair :-

"We are not sorry to hear that some mercy is likely to be shown towards the sixty-six Hindoo students of the Deccan College at Poona. These intelligent youths, finding that verbal remonstrances with the Acting Principal (Dr. Keilhorn) were fruitless, had sent a protest to the Director of Public Instruction, and to the Secretary to Government, who sees after educational matters. This protest was meant to demonstrate that two of the acting professors delivered lectures which were not worth attending to. At the strange course taken by these young Brahmins, the Bombay authorities were aghast; they utterly lost their equilibrium, and in the effort to recover it, they promulgated a sentence, the severity of which is unexampled in the history of Indian Universities. The eleven students in the B. A. class are condemned to rustication for one year, and declared incapable of ever holding scholarships, free studentships or prizes which their studies during the present session were to have obtained for many of them. As to the thirty-four in the next rank, they are debarred in like manner from holding any such privileges for the space of eighteen months, and the twenty-one juniors for twelve months. These punishments may be the just recompense for such an unaxampled revolt of Brahma, but its secular effects must be crushing, and if carried out will cloud the lives of the whole three score and six. We hear, however, that their elders and friends have intervened, while the youths themselves have confessed their fault, and humbly sued for pardon or mercy."

A correspondent at Mysore writes as follows to the Bangalore Examiner under date the 16th ins. -tant:-

"A curious circumstance occured in the household of the Maharajah of Mysore at Ootacamund a few days ago, which has created quite a sensation here, and at which the palace ladies and other members of the Royal family are highly indignant. The people here talk of petitioning the Government of India on the subject, as they foolishly think that their representations, if made to our worthy Chief Commissioner, will not be attended to now, as the hief is now in the Hills, and must have heard the wrong version of the story which, coming from an influential quarter, he will, as a matter of course, entirely credit. The particulars of the story which is current here I will refrain from giving at present, for perhaps some of those particulars may not be quite correct, and may, if published in newspapers, seriously injure several reputations. The of the story is this. One evening, soout a week ago, the Maharajah and his natural brothers and other friends were all together in their residence, when a certain gentleman wanted them or some of them to do something which was repugnant to their caste feelings. An attempt, it appears, was made to compel the Rajah's elder brother, Soobaraj Urs to do that thing; which vexed him so much, that rather than remain on the Hills, and be again perhaps subjected to similar indignities, he soon after left the Hills together with another young nobleman, Lingaraj Ursoo, for Mysore, in a common bullock coach, and without attendants. News of what occurred reached the palace here, and the Rajah's brother-in-law, Bussavaraj Urs, was sent to Nunjengode immediately, and he brought the two young men with him in his carriage. It now becomes Colonel Malleson's duty to explain

the cause of the Maharajah's brother leaving the Hills so suddenly, unattended, and in a common bullock coach, while the Rajah's horses were posted all along the route. His explanation will, we hope, place the matter in its true light, and allay the suspicions entertained by the public that indignities have been wantonly offered to these scions of a

Royal family.

The Prince of Wales had some rough experiences in Nepaul, which are described by Mr. Russell in a letter to the Times :-

"There were two herds of elephants in wood east of the camp, and it was Sir Jung's desire to capture them under the eyes of the Prince. Horses were ordered to be ready at 7 a. m. and the first elephants with pads were sent on

ahead for the Prince and his party. Howdahs cannot be used this work—they would be sweft off by the branches. The Prince had to get astride on a pad, holding on by a strap—the mahout in front with a 'kukeree' to cut creepers and urge his 'hathi,' behind a man with a mallet to hammer the creature into full speed, and these trained racers will do seven miles an hour, the usual pace of the animals being only  $2\frac{1}{2}$ , as a high average. The Prince had at least a novel sensation now, for the elephant, 'kukereed' before and malletted behind, dashed on at a speed which would have been exhilarating enough, but that he went crashing through trees, down ravines, up nullahs, through jungle in the most reckless and terrible manner, and that he had an infinite store of water in his proboscis, which he replenished at every pool, and sluisced himself with from time to time as he ran to cool his sides, quite forgetting that had outsiders, too, and drenching the Prince unmercifully. After two hours of this wild career over very difficult country, Sir Juhg called a halt. It was an experience. But every one who said he was glad he had done it, also admitted he did not want to do it again. The Prince was about the freshest of the whole party, not always excepting Sir Jung, who seems made of iron."

The Pioneer says:

"The following lines will be read with satisfaction by some of our contemporaries of the London Press as confirming their theory regarding the common brutality of the official element to private members of the native community. The letter bears no name. It runs thus: - "Disgust with the manners and treatment of police constables regarding the natives, I am much aggrieved to bring to your notice these few lines. The fact is, that one evening a few minutes passed 9 o'clock some respectable natives were amusing themselves, with a setar, or stringed instrument, when a constable, armed with his usual weapon-the cudgel-stepped before the front door and demanded the party to put a stop to their recreations. On being asked the reason of such an opposition at 9 p. m., the policemen, with no usual tone, announced the reason of such an injunction fron the Magistrate. The assembled gentlemen prudently submitted to this order with the meekness of a lamb, and engaged themselves in a pappy conversation to pass the time. The reasoning is simply this; that playing upon musical instruments at night disturbs the peace of the neighbourhood. But all the world can judge whether such an instrument as the setar, when sounding singly, can distrurb the peace of the neighbourhood at an hour when scarcely any one goes to bed. If the object of a liberal and civilized nation is to see India in the brightest lustre in the eyes of other nations, then the grievances of a handful of respectable natives thwarted in their attempts to go on with musical science at nights, are sure to be redressed-grievances arising not from any selfish principle, but from a pure and healthy motive of culture in Arts and Sciences. Here is another client, and a new grievance for some one or other of our late distinguished visitors to take up, say His Grace of Sutherland for choice. But seriously, it may be questioned whether our municipalities are always wise in their local rules and enactments. The social amusement of the masses in this climate and seaon are not so numerous that it might not be better that the ears of the cultivated few should suffer a little than that vexatious restrictions should be imposed on the many." The above needs no further comments.

The Calcutta Statesman has the following remarks on Lord Northbrook's relations with the Press:-

We regret much that we could not find the time to review the whole story of Governmental relations with the press before Lord Northbrook left India, for we say advisedly that he did more to demoralize the press during the four years he was Viceroy, than any other Governor-General in the last five years" As to "vindicating the liberty of Government servants to write for the public press, it is the wildest nonsense. There never was a period within our memory, when Government servants who had anything of importance to advance in the way of criticism of Governmental action felt so insecure in saying it. Upon the understanding that they praised everything that Lord Northbrook did, after the fashion of the Pitoneer, they were at full liberty to wrote; but adverse criticism if in the least telling, was resented as almost a personal offence to the Viceroy. We hope to review the whole subject at length, but the story is long and troublesome. Meanwhile, we say that Lord Northbrook did all that lay in the power of a narrow and intolerant ruler, to destroy the character of the press; on the one hand, by all but openly selling information to journals that chose to play the advocate and apologist, and, on the other, making it very distinctly understood that independent criticism of Governmental measures was not the way to official favour. As an illustration, every one knows that there was a quarrel between the editor of this journal and the Government of India on account of the suppression of the Economist. The quarrel arose, from the fact that the journal questioned the wisdom of Lord Northbrook's famine measures. Not content with its suppression, it is the fact that Lord Northbrook was little enough when the Indian Agriculturist was started to intimate to the local Government that he wished them not to subscribe to it. He at first proposed to do so officially, and wrote the circular with his own hand, and only withdrew it upon being told that the matter lay within the discretion of the local Governments themselves. In spite of this check, and the fact that the new paper was the only agricultural journal in the country, he, nevertheless, contrived to intimate to the local Administrations that he wished them not to support it: the fact, being disclosed to us by a member of one of these Administrations."

This is the way Professor Tyndall is reported to have ourted the daughter of Lord Hamilton. Our readers are aware that the Professor is a thorough-going sceptic, and does not believe in the existence of the soul :-

"Saccharine conglomeration of protoplasm! Adorable combination of matter and force! Rarest product of infinite ages of evolution! The luminiferous either is not more responsive to the rays of light than are my nerve centres to the mystic influence which emanates from the photosphere of thy countenance. As the heliocentric system was evolved from primodial chaos by the workings of inexorable, so is that rarification of matter which men call my soul gifted from profound despair by the lummance issuing from thy visual organs Deign, O admirable creature, to respect that attraction which draws me toward thee with a force inversely proportional to the squares of the distance. Grant that we shall be made double suns describing concentric orbits, which shall touch each other at all points of their peripheries. Your own Tyndall."

The Spectator says:-

"A curious discovery has followed Mr. Crookes's discovery of the dynamic power of light. It is this, -that selenium, a metal or metalloid which, under certain peculiar treatment, acquires a very feeble power, even when

kept in the dark, of transmitting the electric current, is made by exposure to light, a conducting medium for the electric current, far less inadequate, far more perfect than before. So that a very poor conductor of electricity becomes a good conductor of electricity under the influence of light. In other words, we suppose, a new dynamic effect of light—one exerted especially on the molecular structure of selenium-has really been discovered. Possibly, in the same way, light may be found to stimulate the coducting power of the nerves. It is not a matter to have an opinion upon without exact measurements, but we fancy at least that some of our nerves appear to carry messages much more rapidly when exposed to light than they do in the dark."

It is to be regretted that Her Majesty the Queen is gradually getting unpopular with the nation. Her visit to Germany was a subject of unpleasant comment in the House of Commons as it would

appear from the following:

"Mr. Anderson: I wish to ask the First Lord of the Treasury whether he can inform the House what precedents there are for the Sovereign leaving the country during the sitting of Parliament; whether there are at present reasons of "high state policy" for so unusual a proceeding; and what arrangements have been made to avoid any inconvenience to the business of the nation through the absence of the Sovereign, and of the Chief Secretary of State in attendance.

Mr. Disraeli: The last precedent for the Sovereign leaving the country during the sitting of Parliament, was in the year 1872. (Laughter.) The present reasons for Her Majesty's leaving England are strictly domestic, and arise from the bereavement of Her Majesty's nearest and dearest relative. Every arrangement has been made to avoid any inconvenience to the business of the nation, through the absence of the Secretary of State in attendance-not the Chief Secretary, who, I am happy to say, has a seat in this House, and is now on my left. (A laugh.)

Mr. Anderson: Perhaps the right hon. gentlemen will state whether, in the one precedent to which he refers, the absence of the Sovereign was for more than two days, and whether Her Majesty's absence was not practically during the Easter recess, although Her Majesty left England two days before the House broke up for the Easter recess. (Hear, hear.)

Mr. Disraeli: According to the rules of the House, the hon. member will of course give notice of this question. Mr. Anderson: I beg to give that notice now.

Mr. Sulivan: I thought the right hon. gentleman would, perhaps, have answered at the same time the question of which I have given notice-namely, whether he could state how far the Government, when advising the Sovereign to depart the realm, while Parliament was sitting, considered the ancient privilege of this House, the recognition of which is applied for and promised on the opening of each session-namely, free access whenever they deem necessary during their deliberations to audience by the Sovereign.

Mr. Disraeli: It was from no want of courtesy that I failed to answer the question of the hon. gentleman, but I omitted to observe that it followed immediately the question put by the hon. member for Glasgow. I beg to assure the hon. gentleman that the ancient privileges of this House, to which he has alluded, will not be at all affected by the absence of Her Majesty, and that there will be free access to Her Majesty to any member of the House of Commons who seeks an audience of Her Majesty at Baden, because Her Majesty has full confidence that these audiences will never be requested from idle curiosity."

A correspondent of the Daily News suggests that Mr. Disraeli should be made a Prince "In for a penny, in for a pound," says the correspondent: "if we're to have an Empress and Vice-Emperor in India, why shouldn't we have a Prince Prime Minister here? The important political reason for it is ovious: when prince Bismarck appears in England before the Battle of Dorking, we shall simply produce our Prince Disraeli with a herald proclaiming his title, and the German army will of course evaporate at the mere sound of his name."

Whenever the Great Mogul made an observation his courtiers used to cry "Wonder, wonder," and if he took it into his head to assert that it was night before the middle of the day had passed, it was the duty of His Majesty's attendants to observe that the moon and the stars were shining. According to Sir George Campbell the Queen is the successor of the Great Mogul, and although Her Majesty is not likely to assert her royal prerogative for the conversion of day into night, her Indian subjects will as readily believe in her absolute power as if she were to do so. But what would be the fate of "John Bull" the acknowledged author of the following verse, if the Queen were to follow the example of her illustrious predecessors in India in respect to impertinent rhymesters?

Upon St. Patrick's morn the grieved world saw Its first of ladies christened Pad-i-Shah, An English Queen thus made an Irish man To please the millions of vast Hindostan.

In connection with this addition to the Queen's "style and titles," it is curious to observe that when a century and a half since the Czar of Russia claimed the title of Emperor, he had some difficulty in getting his claims recognised :-

"There was a vast deal of correspondence between the European Courts on the subject, and England appeared to be disinclined to admit the Czar's rights to the title. "The custom," wrote the Secretary of State (Lord Carteret) "has always been to write to the Czar of Muscovy on illuminated vellum painted and gilt, as one writes to the Emperor of Morocco and Fez and to may other non-European Princes, who resting on this custom would be equally justified in insisting on the title of Emperor." The Czar's right to change his title was at length agreed to, but it was not until many years later that the new title came into genera

It is comforting, therefore, to know that the Queen's new title has been approved by Russia without any tiresome delays.

The Bombay Gazette remarks on the adminis-

tration of Lord Northbrook:

"The want of a well-defined foreign policy -- Lord Northbrook having, it would seem, on aim but to keep things smooth—and his high-handed acts of injustice to individuals, excited a strong feeling against the late Viceroy. But certainly the chief cause of his unpopularity on this side of India was his arrogant misuse of the powers of legislation unhappily placed at his command. Lord Salisbury complained of the disregard for Indian public opinion shown when the Tariff Act was passed; but the cynical disdain of outside opinion reached its climax in the Indian Legisature on the memorable day when Lord Northbrook, Mr. Hobbouse, and Mr. Hope thrust the Revenue Jurisdiction Bill on the Government, the Judges and people of Bombay in spite of their vehement and unanimous protests. It must be obvious to every man who cares to think about the matter that a Government which ventures upon such acts of despotism cannot endure. No parade of splendid titles and ceremonies, on material strength in reserve of unconquerable soldiers, will compensate a Government for the alienation of the affections of its subjects, and the most powerful Government on earth might well shrink from encountering the distrust and odium to which the recent action of what may be called the Legislative branch of the Executive has exposed the Government of India. Some modus viveudi other than that of mere force, which is all that remains to the State, must be found between the Government and its subjects; and for this reason we contend that nothing is more urgently needed than a reform of the Indian Legislature;

The following anecdote illustrates the truth of the proverb anent the slips between the cup and the lip:—

A few years before his death the Emperor Nicholas of Russia sent a looking-glass of rare size and beauty with an embassy, to the Emperor of China. The looking-glass had to be carried all the way from St. Petersburg to Pekin by human hands. Despite the immense distance which had to be performed in this manner, the looking-glass safely reached China, but, in the meantime, difficulties had broken out between Russia and China. The Son of Heaven neither admitted the embassy, nor did he accept the present. A courtier was despatched to St. Petersburg, and asked the Emperor what was to be done with the looking-glass. The Emperor replied that it should be carried back by the same route, and in the same manner. when he gave this order the Grand Duke Michael happened to be present, and offered to lay a wager with the Emperor to the effect that the looking-glass would be broken on the way back to St. Petersburg. The Emperor accepted the wager, and the bearers of the looking-glass received stringent orders to be as careful as possible, and if they should bring it hack safely they should receive a handsome reward. They carried it back with the most incredible care, forty men bearing it by turns, and safely reached St. Isaac's Palace in St. Petersburg with it; where the Emperor stood with his brothers at the window of his palace, and laughed at having won the bet. But on the stair-case of the palace one of the carriers slipped his foot, fell down, dragging several of his companions after him, and the precious lookingglass was broken into a thousand pieces. The Grand Duke, therefore, wan his bet.

Mr. Carmichael, the Commissioner of Benaras, who never allows a native, even the Rajah of Benaras to go before him with his shoes on, has been forced by Government to make this humble apology to a Munsiff whose character be most wantonly assailed:—

"From the Officiating Commissioner, Benares Division to the Officiating Secretary to the Government, North-Western Provinces. Dated, Benares, the 21st March, 1876.

Sir,—With reference to the concluding remarks in para. 65 of the orders of Government, on the Police-Administration Report of these Provinces, for 1874, and to para. 5 ef my review of the Benares Police Reports, which elicited the same, I have the honour too state for the information of Government that I have, within the last two days, been furnished, through the courtesy of the Civil and Sessions Judge here, with a copy of the order of his predecessor reversing the

decision of the Munsif, on which I had animadverted.

2. Coupling the Magistrate's report of the case. (which is strictly correct in facts) with the statement which Mr. Colvin made that the Judge upset the Munsif's decision, I too hastily arrived at the conclusion that the Judge in so doing had regarded the said decision as an unjust one. I find, however, now that I have had an opportunity of reading Mr. Willock's judgment, that he reversed the Munsif's decision simply on legal grounds, and without calling into question or impugning in any other way the Justice thereof. My remarks, therefore, were entirely uncalled for, recorded as they were under the erroneous impression that I was merely following in the footsteps of the Judge.

3. The above facts having come to my knowledge I take the earliest opportunity of making the only reparation in my power to the Munsif, whose character for justice I had thus unjustly assailed, and beg, therefore, that, as Government called the attention of the High Court of Judicature to my former remarks, a copy of this letter my also be transmitted to the Court in vindication on my-part of the Munsif's character, and in expression of my extreme regret that one of the Judges subordinate to that Court should have thus suffered unmerited obloquy, though only for a time, at my hands.

4. I have also given the Judge here, Mr. Brodhurst, a copy of this letter, and I have asked him to express to the Munsif my great regret that I should have injured him, as I did, both in thought and word.

I have, &c...

I have, &c., C. P. CARMICHAEL, Offg. Commissioner."

Many of our readers must have heard the name of Agha Shaib. He was at first a Hindoo, then a Christian, and now he is a follower of Mahomet. The Lucknow Times has the following regarding

him :--"We hear that His Royal Highness the Prince of Wales has invited Agha Shaib to re-visit England, and he is preparing to do so. We gave Mr. Agha Sahib a rather prominent notice a short time since, the particulars of which, though we would wish them to be remembered, we do not wish to recapitulate here. Agha Sahib went to Calcutta to bid farewell to Lord Northbrook, and was invited by His Lordship to dine at Government House, where he met the Prince of Wales and received the gracious nvitation above referred to. We need hardly remind our readers that Agha Sahib is the original Moonshee Mohun Lall of Delhi who accompanied Sir William Macnaghten to Cabul it 1839-40. Though a renegade from two faiths, first the Hindoo, next the Christian-he has always been a most faithful servant of the British Government. He is now, we believe, a Mahomedan and married into those members of the royal Afghan family now in exile

at Loodhiana. The Agha is in receipt of a Government pension of Rs. 500 per mensem. An as instance of his modesty, we may mention that he conspicuously attached his name as a doner of a portrait of Lord Northbrook to the Town Hall of Delhie."

The Bombay Gazette takes the same view as we took regarding the question whether India is to be governed by the Governor General or the

State Secretary. It says :-

It is true that to the non-official world of Anglo-Indians and natives the quarrel between the Secretary of State and the Viceroy is merely a fight between King Stork and King Log; whichever wins, their duty remains the same, to pay their taxes and say nothing. But on the whole their fate would be less intolerable if they were governed by telegraph from England than if they were placed entirely at the mercy of a Council of Indian officials quartered in the Simla "shooting lodge" Whatever an English Minister does is oxposed at once to the fierce light of publicity, and subjected to the ordeal of free and enlightened criticism both within and outside the walls of Parliament; and the tolerant and liberal spirit of the English nation is a grantee against the possibility of any serious abuse of his power by a Secretary of State for India. In the recent dispute Lord Salisbury was no sooner suspected of having aimed at a dictatorship in order to gratify the wishes of Manchester than a thousand sharp-eyed adversaries pounced upon him and forced him to fight for his life. It is impossible not to admire the energy and complete success of his defence, or to help feeling confidence in the good faith of a Minister who is straightforward and self-reliant with both friends and enemies and does not flatter himself that he will gain credit for being a great statesman by a policy of secrecy and "surprises." Now consider, on the other hand, what would have been our lot to-day if Lord Northbrook had been the antocrat he wished to be. Lord Lytton appears to be a man of more generous sympathies, and his significant remark about the tendency of modern civilization to keep any one nation from becoming insolated and from supposing she can suffice unto herself shows that he can appreciate the unity of purpose which must control all the varieties of race and opinions in the British Empire, and that he can be trusted not to legislate for this country as if India were to remain eternally subject to a dynasty of clerks. The Indian Civil Service has produced a few statesmen, but as a rule it supplies the country-at least in the class of men who usually rise to high positions in the service—only with meritorious clerks, distinguished by a great capacity for misdirected labour and by an intolerance which is the natural result of a career passed out of the reach of the healthful influences of English public life. In Lord Northbrook the bureaucrats of the Civil Service found a kindred spirit, for the late Viceroy was a clerk by instinct; and recent Indian legislation has therefore been marked by that absolute and insolent disdain of public opinion which the Ministers of despotic Sovereigns, who are generally statesmen, dare not show, but which the ordinary bureaucrat, the official prig, prides himself on displaying to the world. A Legislative Council which could summarily pass the Tariff Act of 1875 and the Bombay Revenue Jurisdiction Bill would, if it had the power, shut up every printing press in the country, and establish in India a tyranny of the most degrading kind. We do not, therefore, desire the abolition of the power of control now held by the Secretary of State. We cling to the hope that in the Legislative Council of the Viceroy may yet be found the germ of an Assembly in which the public opinion of India may be represented, and for this reason we are anxious that the independent authority of the Government of India should not be encroached upon. But it is not to Indian officials that we can took for any enlargement of the rights and liberties of the English and native subjects of those Civil Servants of Her Imperial Majesty who are chosen to rule this country. For a long time to come it will continue to be the case as it has been in the past, that every office of emolument and honour in India will be appropriated by the serwants of the Crown, that every possible discouragement will be given to private citizens to take an interest in public affairs to care for anything but making money and seeking, if they are Englishmen, some other country to live in. and that, where the people are mocked with the pretence of self-government in local affairs, some Convenanted Mogul will be appointed to supervice them after the fashion of a greedy and unscrupulous task-master, and, while complacently eating up all the corn, to damn them for their want of public spirit in not contentedly chewing the husks.

This is, in plain language, a description of the present system of Indian administration; and it is some consolation that an appeal lies to the Secretary of State against the decrees of the Government of India

of India.

The Home correspondent of the Bombay Gazette has the following observations relative to the improved nature of the relationships between Russia and England as represented by the press of the former country:—

"There is also another remarkable feature in the tone of the Russia press. I refer to the sudden outburst of friendship towards England. This new attitude is the more remarkable in the face of Mr. Disraeli's references to Russia in the progress of the Royal Titles Bill. It may, however, be explained in the fact-for such it now seems to be-that the Czarewich is to be appointed Regent, and in the expectation that the Czar will very shortly abdicate. This subject has agitated the Continent for nearly a week past, mainly because of the well known sympathies of the Grand Duke with France, England, and Denmark. It is believed on every hand, that not only will the Grand Duke's accession alter the relationship between the Courts of Berlin and St. Petersburg, but that it may also lead to a better understanding between England and Russsia in regard to Central Asia. Unfortunately for the prospect of a good, accord, the work of the Russian empire will continue to be done by, the same men whose diplomatic devices have made Russia a by-word in the eyes of frank and honest statemen, and we can only look to the Grand Duke's personal friendship with the English Court, and his personal knowledge of English views and opinions, inducing him to restrain the unserupulous ambition of his Ministers. The cause of the Czar's desire to be relieved of the Russian Crown is only mentioned in whispers. Some people say "brandy," but others denythis, and allege that it is his morbid fear of assassination, We had an illustration of that fear when he was in England. for he always code in a carriage to so high at the sides that his head only was visible, and the story went that the panels were lined with sheet iron. I believe that he is suffering from some mental malady, and it is said, too, that his despondency has greatly increased since he parted with his daughter, on her coming to reside in England. She is now with him in St. Petersburg, and will spend a good deal of time in his company while the Duke of Edinburgh is with the fleet.

The Lahore paper has the following:—
"During the past week some voilently disturbing element

has been at work upon the judicial bench, the ual serenity of which has, we learn during the past few vs, been often most alarmingly disturbed. Whether this end to may be traced to atmospheric causes or not, we are unprimed to say, though it is not at all improbable that the suden change in the temperature may have brought about at irratability which has lately taken the place of the judicial calmness which has hitherto reigned upon the judicial bench of his Province, especially that of the highest tributional in it. On Wednesday last the judges who formed the full bench, which sat for the hearing of cases which had been referred to them, seemed to have met together to differ rather than to agree. Differences of opinion are phenomena which are by no means rare, of this we are fully aware; but the warmth which characterized the expression of them was, to say the least, most unusual.

It is quite time, we think, that thermantidotes and khus-khus tatties were put up in the Chief Court, a stock of sedatives kept in readiness for im-

mediate use.

The Lahore correspondent of the Pioneer writes: "An unpleasant incident took place a few days ago at Umballa station-distressing, but not devoid of a certain girm humour in what the Greeks called the "katastrophe." A number of dak garris were drawn up outside the station awaiting the arrival of the midnight train from Calcutta, by which is Excellency Sir Frederick Haines, Sir Andrew Clark, General Lumsden, and other distinguished personages were expected to arrive. The dak garris in question had been engaged to convey these high officials to Simla, and Mr. Buckner, the inspecting Pest Master, was also in attendance to see them fairly started. Shortly before the arrival of the train, to young officers, presumably with more "wine than wit" on board, made their appearance, and got into some dispute with the van mohurrir, and having incontinently sought to add weight to their opinions by punching the Babu's head, and thrashing one of the coachmen, they turned upon the Post Master, who came up to explain whose carriages they were so rudely seeking to take possession of. The young gentlemen expressed their contempt, in language considerably more forcible than polite, of the personages for whom the carriages were destined, and for the Post Master who had made the arrangement. Words gave place to blows, the military constable on duty had a wholesome dread of the British military, and the assailants refused to give their names to any one. The grim humour is yet to come, for, it seems that, on the arrival of of the train the Post Master complained at once to the Commander-in-Chief, who Interviewed the officers, as they were taking their seats in the train whence he had just alighted, and politely asked them their names. "Who the d-are you ?" one of them replied, to which the quiet answer-" Sir Frederick Haines-must have been rather sobering, but not quite enough, I believe, to induce them to give an explanation of their conduct. I hope they passed a good night afterwards. For some reason or other His Excellency was not met at the railway station by any more distinguished military representative than the two young gentlemen in question, who hardly amounted to a "guard of honour." I suppose the Commander-in-Chief was considered in transitu and so was comparatively incognito. Had it been otherwise, the "row" in question would never have taken place. After all, there is a good deal of good and bad luck in this life, and, really, to "kick up a row" at a railway station, and find one has dene so under very nose of the Commanderin-Chief, is tolerably strong. On the complication principle, one must have had a good deal of good luck te work off, or Plenty to come, which is perhaps the pleasantest view anybody can take of the whole affair."

#### ENGLISH IGNORANCE OF INDIA.

(The Times.)

Unquestionably it seems at first sigh a curious anomaly that the history of the great Empire of India, the possession of which we view with so much pride, and the integrity of which we guard with such jealous care, should create, is not distaste, at least indifference, in so many educated and, is other respects, well-informed minds. Some recent incidents may seem to contradict this proposition, but they really confirm it. The unanswerable complaint against certain pending Government schemes for dealing with India has been that Ministers appear to have left India herself out of the question, and to have been thinking only of England Is not the incapacity for rousing an interest in Indian matters on their own account brought before our notice in each successive session of Perliament when the secretary for India rise to unfold his Budget? It is the same on other occasions when India and things India are before the House. How languid is the interest, and how scanty the attendance at those times, is well known. Such indifference must, in a great measure, arise fron ignorance, for people, as a rule, are not wont to be indifferent to subjects on which they are well-informed. If, then, the ignorance is allowed, how and whence does that ignorance arise? In the first place, it arises, no doubt in the earlier years of life; is the fault, in short, more of the teacher than the taught. In our schools and universities whenever history is taught, what share of that study is allotted to the history of India? The history of our own country necessarily embraces no small portion of the history of other countries. Our early quarels with France alone carry the student into many lands and among many people. Malborough's campaigns in the Netherlands, the War of the Succession. and Peterborough's, brilliant exploits in Spain, the Seven Years' War, the revolt of our American Colonies, the battles of the First Napolean in Spain, in Egypt, and in Belgium; with all these the student of English history is as much concerned as with the defeat of the Spanish Armadaor the landing in England of William of Orange. Everybody with any taste for history-and most clever boys have a taste that way, if they are not discouraged at the outset by too severe a course of dates, will read with avidity of the battles and marches of English armies in foreign lands, and glean thereby, at least, some insight into the histories of those lands themselves. But there seems to hang a strange fatality over the history of our Empire in the East, and it is most probable that there are many clever lads who could turn an ode of Shelley's into almost Horatian sapphies or a scenie from "Shakspeare" into faultless iambics, and could even give a very fair summary of Wellington's campaign in the Peninsula or our war with Russia, but who would be sadly at a loss if questioned on our Great Captain's Indian battles, have never, perhaps, hoard of the Khyber Pass, and would entertain but very general and shadowy ideas even on the subject of the Indian Mutiny. We suspect, indeed, that we should not greatly exaggerate if we attributed the information on India-geographical, historical; and social-at present possessed by, perhaps, one-half of educated society to the Prince o Wales's visit to that country.

Ananda Chatteree's Lane, Bagbazar, Calcutta.

তরপ শুল্ক বদাইলে স্বাধীন বাণিজ্যের পথ অবস্থা হইবে তাহা তাহার। সম্পূর্ণ রপে স্বীকার করেন, অত-এব ফেট সেক্রেটরি এ সম্বন্ধে যে রাজ নীতি নিদ্ধা-রগ করিবেন স্থির করিয়াছেন তাহা সর্মতোভাবে মঙ্গল-দায়ক।" যদি ফেট সেক্রেটরি আরো গুটি করেক নিয়ম করিতেন, অর্থাং লিথিতেন যে ভারতবর্যবাসীরা ম্যাপ্থে-ইত্তরের বস্ত্র ভিন্ন অপর স্থানের বস্ত্র পরিধান করিতে পারিবে না, ভারতবর্ষে কেহ বস্ত্র কি স্থত। প্রস্তুতের কল স্থাপন করিতে পারিবে না তাহা হইলে ম্যাপ্থে-ইরবাসীরা আরো অধিক সম্ভাই হইতেন এবং তাহা হইলে ভাঁহার রাজনীতি কেশিল আরো সর্মাজত্ব দার

ू ভারতবর্ষের উত্তর পশ্চিম সীমার যে সমুদর পর্বত মধ্যন্থিত তুর্গম পথ ছিল, ইতি পূর্বে দে সমুদয় রক্ষণের ভার পার্বতীয় জাতিদিগের হস্তে রক্ষিত रूरेण। এখন जथीय रेश्तिकाता अयश रेमना तका कतिरङ्ग। (वालानशाम भवर्गपाने कर्यक मल रमना (প্ররণ করিয়াছেন, আবার খাইবরপাদেও ইং-मञ्ज किंगियात माम देश्ताकिं पितात युक्त आंतु इरेरि । इंडेर्त्रार्थ वर कथ ताष्ट्र रय, रेश्लख उ थाणिया वक मित्क भिशाष्ट्रम, এवर कान्म, क्रिशा, अधिशा थ्रञ्डि जाना मिरक शिशां ছে। मिथारन इंश्व त है श्हेशा (ए (य, क्रिशिय मुमा है युक्त क्रिडि ज्ञान्य इ इ-য়ায় প্রজারা তাহাকে দিংহাদন্ত্যত ক্রিয়া তাহার পুত্রকে সিংহাদনে আরোহন করাইয়াছেন। আৰার গ্রবর্ণমেন্ট উপরিউক্ত পার্ব্ধ গীয় পথ সমুদয় রক্ষা করি-वात উদ্যোগ করিতেছেন। এই मकन काরণে লোক অতিশর শক্তিত হইয়াছে, এমন কি, কোম্পানি কাগ-জের দর ক্রমে কমিয়া ধাইতেছে।

মহিষমারীর রাস্তা সম্বন্ধে গ্রন্থনিটে ছই খানি আবেদন পত্র প্রেরিত হইয়াছে। এক খানি উহার সপক্ষে আর এক খানি বিপক্ষে। এই রাস্তা সম্বন্ধে শুকতর তর্ক বিতর্ক হইতেছে এবং আমরা ভরদা করি গ্রন্থনিট এ বিষয় তদারক করিয়া দেখিবেন।

### विखाशन।

২৪ পরগণার অন্তর্গত স্বান্তয়নগাছী বন্ধ বিদ্যালয়ে এক জন সংস্কৃত কালেজের ইংরাজী ভাষাজ্ঞ ছাত্র ও এক জন নমান স্কুলের ত্রৈবার্যিকী পরীক্ষোতীর্ণ ছাত্র এই রূপ ছই জন শিক্ষক প্রয়োন জন। বেতন ২০ ও ১৪ টাকা। হাতিবাগান বারুদীন নাথ সাহা মহাশয়ের ৪ নং বাটীতে আবেদন পাঠা-ইতে হইবে।

#### LOST.

Between the Hooghly Bridge and No. 4, Jetty on Saturday last an Envelope addressed "Messrs. Macneill & Co., Managing Agents Equitable Coal Company Limited" containing deeds. Contents of the Envelope can be of no value except to the undersigned.

The finder will greatly oblige by returning same and will be rewarded if required.

MACNEILL & Co.

I LYON'S RANGE.

### मश्याम

— এक थानि जर्मिनी मधान পত्रि এই मधानी क्षका-निष्ठ इहेशार्छ। প্রোটেক্টান্ট খ্রিকানদিনের ১৫৫৯টি

মিশনারি ফেশন আছে এবং তথায় ২১২২ জন ধর্ম
যাজক ধর্ম প্রচার করেন। ইহারা ১৫১৭ ০৭৪ জন
খৃষ্টানকে ধর্ম শিক্ষা প্রদান করেন। মিশনারি ফেশনে
১৮৯০৫৯ জন পাঠক আছেন। ইহারা ধর্ম শিক্ষা
প্রদান করেন। ইহাদের নিমিত্ত বংসর ১১০৭১১৪০
টাকা ধ্যিয় হয়।

ফারের বস্ত্র ভিন্ন অপার স্থানের বস্ত্র পরিধান করিতে
পারিবে না, ভারতবর্ষে কেহ বস্ত্র কি সূত। প্রস্তুতের
কল স্থাপন করিতে পারিবে না তাহা হইলে ম্যাঞ্চেন
কল স্থাপন করিতে পারিবে না তাহা হইলে ম্যাঞ্চেন
ফারবাদীরা আরো অধিক সম্ভান্ট হইতেন এবং তাহা
ভইলে জাহার রাজনীতি কেশিল আরো সর্বাজন্ম করিতে

ত্রাজনির স্থানের বস্ত্র পরিধান করিতে
ত্রাজনির স্থানের বস্ত্র কি সূত। প্রস্তুতের
করিয়াছেন লক্ষ্ণেয়ে ইতি মধ্যে উহা প্রতিবাদের
দর্শনি প্রহণ করেন। সম্পুতি লিবর পুলে একটি
করিয়াছেন লক্ষ্ণেয়ে ইতি মধ্যে উহা প্রতিবাদের
মুবতীর জ্বর হয় । তিনি শঙ্কটাপয় পীড়িত হইয়া
ফারবাদীরা আরো অধিক সম্ভান্ট হইতেন এবং তাহা
ভইলে জাহার রাজনীতি কেশিল আরো সর্বাজন্ম করিতে

ত্রাজনীতি কেশিল আরো সর্বাজন্ম করিতে

ত্রাজনির বস্তুত্র করিয়াল করিতে
করিয়াছেন লক্ষ্ণেয়ে ইতি মধ্যে উহা প্রতিবাদের
করিয়াছেন লক্ষ্ণেয়ে ইতি মধ্যে উহা প্রতিবাদের
করিয়াছেন করিবে প্রস্তুত্র করিয়াছেন করিবে প্রতিবাদের
করিয়াছেন লক্ষ্ণেয়ে ইতি মধ্যে উহা প্রতিবাদের
করিয়াছেন করিয়াছেন করিতে
করিয়াছেন করিয়াছিল এইল করিয়া হইয়া
করিবরপুলে লইয়া যায় । তিনি হাত ছাড়াইতে না

—এ বৎসর যে রূপ অনুমান করা হইয়া ছিল তাহা

অপেক্ষা অনেক আফিং অধিক হইয়াছে। প্রায়ই দেখা

যায় যে, গাবর্গমেন্ট বাহা অনুমান করেন তাহা অপেক্ষা

আফিং শেষে অধিক হয়।

—প্রিন্দ অব ওরেলদ ভারতবর্ষে যাহাকেই মেডেল প্রদান করেন তাহাদিগকে অনুমতি দিয়াছেন যে, তাহারা মেডলের উপর ভাঁহার নাম অঙ্কিত করিতে পারেন।

— जारकालांश अक जन गूमनमान करो। क छेत जाशांश अधीनम् जानक शिल कूलिएक इंडा। कि दिशाएए। स्म िटिं श्रीकांत कि बिगार्ड (य, जारांत्र जभीति (य ममूज्य শকট বাহকেরা কাজ করিত তাহার ১৪ জনকে সে विष পान कर्ता इंगा इंजा कर्ता गूमलमान कर्षोक हैत তাপাতত পুলিস কর্ত্ক প্রত হইয়। হাজতে রিক্ষিত হই-अर्दि। शाबिरमत जक थानि मन्न म शक् विष धर्मा भ शांटि। शांतिरम এक জन ডाकांत माँठ वाधाइछ। त्म এই कार्या विर्णिष তৎপর থাকাতে অনেক ধনাতা वाक्ति তाহाর निक्रे इहेट माँ व वाँ वाहेश लहेट न। अहे मछ **फा**कात भगाग गिकि.मिरात छेखताधिकाती-मिश्तित निक्रे इरेड उर्काठ खर्ग श्रांक पख वाँधा-(नत पूर्यार्थ जाश्मिग्रंक विष প্রয়োগ করিত এবং वर् ताल विवाक रहेश जारात्र। व्यान जारा कति-(जन। मटखत ডाक्कात धत्रा পড়িয়াছে এবং আপাতত বিচারাধীন রহিয়াছে।

—রাইন নদীর নিকট এক ব্যক্তির একটী প্রাক্ষ ক্ষেত্র ছিল। কিন্তু তাহার প্রাক্ষণতা ক্রমে ক্রমে শুখাইতে লাগিল। কেন উহা শুকাইয়া যায় সে তাহার কোন কারণ নিদ্দেশ করিতে পারে না। কিছু দিন পরে তথায় কারবলিক আসিডের গল্পের আণ তাহার নাশিকারস্থ্রে, প্রবেশ করে। ক্ষেত্রের নানা দিকে সে অস্বেষণ করিল, কিন্তু কোথা হইতে এই গন্ধ নির্গত হইতেছে কোন ক্রমে তাহার অসুসন্ধান পাইল না। শেষে প্রাক্ষ ক্ষেত্র খনন করিয়া দেখে যে, ক্ষেত্রের নিম্মে একটা স্থান জলে পরিপূর্ণ এবং এই জল কারবলিক আসিডে পরিপূর্ণ রহিয়াছে। এই জল অনেক রোগের উত্তম ঔষধ এবং সে এই কারবলিক আসিড মিশ্রিত জল বিক্রয় করিয়া বড় মানুষ হইয়া গিয়াছে।

—वर्धः तत्र द्यां लियादगत्र कथा मकत्ल ख.नियाद्व वछ दित्र त राजा अक जन करम ताजा। इंशा ता जात প্রজারা সহদা রাজ বিদ্রোহী হইয়া উঠে। প্রজারা क्रिय वाशिया त्रांक वाशि वाक्यन क्रिया त्रांका देश-দিগকে শাসন করিতে জক্ম হইয়া গ্রণ্মেণ্টের সাহাষ্য वार्ग करद्रन। श्रवन्यके खाजाि मिश्रक ममन कर्त्रवाद्र निभिन्न कडक छिनि रेमना एथावन कित्रिया डोशि मिशरक (मछत्रान। धक ही जाक निक्चि जाता शामात (इतन त উপর রাজার কি শুভ দৃষ্টিপাত পড়ে। গোয়ালার পুত তেমে রাজার প্রিয় হইয়া উঠে। তিনি কমে তাহাকে তাহার দেওয়ানের পদে নিযুক্ত করেন व्यर त्राकात छेशत कर्म ठाशत व तथ जाधिशंग इय (य द्रांक शदिवां द्रष्ट्र जाः निक जो शिव कि इन। शोशानात शूर्वत ऐट्ट छेठिया मिलक यूर्तिया यात्र वर जारात्र कल अरे शका-विदेश र

—সার উইলিয়াম গল ইংলণ্ডের মধ্যে এক জন অতি প্রধান চিকিৎসক। ইনি লগুন নগরে চিকিৎসা করেন। লগুনে তাহার এ রূপ পশার যে, কদাচিৎ তিনি নগরের বাহিরে চিকিৎসার নিমিত্ত গমন করিতে পারেন। বাহিরে গেলে তাহারও বিস্তর ক্ষতি এবং নগরবাসী দিগেরও ক্ষতি হইবার সম্ভাবনা। ইনি এই নিমিত্ত বাধা হইয়া অনাত্র গমন করিতে হইলে অধিক দশনি প্রহণ করেন। সম্পুতি লিবর পুলে একটিযুবতীর জ্বর হয়। তিনি শস্কটাপয় পীড়িত হইয়া পড়েন। সার উলিয়মকে য়ুরতীর অভিভাবকেরা লিবরপুলে লইয়া যায়। তিনি হাত ছাড়াইতে না পারিয়া দেখানে গমন করেন এবং এক বিজিটেরম নিমিত্ত ৩০০ শত গিনি প্রহণ করেন।

—जाभवा इंजिश्तं धक वांत धकांन कति यः क्रान्ति भाग श्राम আমরা যেরপ গোলাস দেখিয়া থাকি তাহার আয় কণ-जम त न दर। दिखिन। नामक अक वार्कि अहे शिनाम প্রস্তুত করার প্রকরণ আবিষ্ণার করিয়াছেন। কি छेशार्श अहे ज़श रशनांग श्रेष्ठ इस व्यन छ। इ। প্রকাশ হয় নাই, কিন্তু ইহা যে তত কফ দাধা কি गुश्र माथा नट्ड जाहा প্रकालिक इहेशांट्ड। पहे शिलांटम्ब ञाविक्षांत्रकाती এত नृत ध्वकांक कित्रिताहिन य, अथन शिनाम প্रञ्ज कि एक या गात इत अहे चूक न श्रकारतत शिलाम श्रञ्ज किंद्रिक जमः श्रमा भेज क्या ६० होका जिधिक बाग्न ७ कर्त्रक विचित्र जिथक मगन लोगितक । वानक जा भवोक। प्रांत्रा मध्यान इरेशार्ड य, अथनकांत शानाम जार्थका ७० छन किन अदे हेश जिल्ला हेक कित्री महमा भी जल कितिल काछिया याइटव ना। अहे (भंनाम जूमिट निःदक्ष कित्रल भाष्ट्र भारवत यात्र लफ्क मित्रा छेट्ठ, डाजित्रा

— (वाश्वाद्य मन्त्रु कि धक्की मक्ष्मा डेशिश्व इहे-शांट्या এक জन वां जिक इ वटल य एम थक ज्ञां मञ्ज জানে। । के मञ्ज भाष्ठ कितिल जोश्रंत भाषीत जारजना इहेरव। छेश्त ভिত्त वन्मूरकत छिलि श्रीं छ श्रार्थ कित्रिक शांदित नां। अकि श्वांदन दम अहे मद्बित्र कल পরীকা করে। বাজিকর মন্ত্রপাঠ করিয়া শরীরকে অভেদা করিল। অপর এক জন তাহাকে লক্ষা করিয়া छिलि क्रबा छिलि वािक्रिक्टब्र मछरक्त्र मस्या छिविष्ठे इहेश जलकार जोहात मृजा हा। लिए निम हेजा-कांबीक विष्यां नात्र प्रानान प्रमा इंडाकांबी विलं তেছে যে, বাজিকরকে হত্যাকরা তাহার অভিদন্ধি ছिল न।। वाজिकदि इस जो जो य अजदन विलि छ एय, शृद्य जात्वरक अहे जाल वाजिक वरक लका करियां छन्नि कर्त्र, किन्छ कथन इ जाहात्र नंतीरतत्र मरधा छनि थाउँका करत नाई। धरात वसूरकत छनिएड कि क्र. १ ए जाराज मृजा रहेन जारा जाराज विलाज भारत न।।

শ্বর্ণনেটের ছুর্ভিক্ষ সংক্রান্ত যে হিদাব প্রকাশিত হইয়াছে তাহাতে দেখা যায় যে, ছর্ভিক্ষের নিমিত্ত গাব-র্ণনেট ৪৪০০০০০০ টাকার ৪৬০০০০ টন শদ্য ক্রেয় করেন। ২৮ মনে এক টন হয়। ত্রিহুতে ইহার ৪৮ লক্ষ্ণ মন অর্থাৎ ১৬৮০০০০০ টাকার শদ্য বায় হয়। সমুব্য় বাজলা ও বেহারে ১২০৬৫০০০ মন চাউল নফ্ট হয় এবং ইহার মূল্য ৪২৭১৭০০ টাকা। প্রের্ব অনুমান কর হয় যে, ছুর্ভিক্ষের নিমিত্ত ৬৫০ লক্ষ্ণ টাকা বায় হয় । হুর্ভিক্ষের নিমিত্ত ৬৫০ লক্ষ্ণ টাকা বায় হয় । ছুর্ভিক্ষের নিমিত্ত ওবেলওয়ের ১৭০০০০০ টাকা আয় হয় । ছুর্ভিক্ষের নিমিত্ত রেলওয়ের ১৭০০০০০ টাকা আয় হয় । ছুর্ভিক্ষের নিমিত্ত ইংলও হইতে ১৪৬৫০০০ টাকা তাদা সংগ্রহীত হয় এবং ভারতবর্ষে ১০১১৯০ টাকা আদায় হয় ।

— मास्पाद्धत जन करमक श्राम देश्योद्धत छ मार्था छेल्य शिक्षम जारमित्रकाम এकी छेशिनदिश मश्छा-शरन्य छेरम्भा दहेल्ह । जामार्मित विद्याम

या श्वा था । अहे जा छे शिनादिका खोशन करत, जा श्वा काटन विक्रमभानी इয়। ইংল্ডের অত্যাতার সহ্য क्रिट्ड ना शादिया इंश्त्रां जात्यतिकाय यिन छेथ-नत्नां अभिन भा कितिएजन, जारा इहेल जात्मितिका-नामी मिर्शत षाता अथन जगर जत्र (य जमश्था छेशकात्र इन्टिंश् जोश कथन इन्ड ना। या श्वा हे भागतन श्रांभिन कर्त्रम जांकाता खन जांभनामित शत मङ्गल मन्नी मन करत्रम ना, जो श्रांपत्र कार्या माय जग्र श्रीत्रशीरम विरम्भ छेशक् उ इत !

- बचा (मन लहेश। हेश्वां जाता किছू गाजि वार्छ পড़ि-अर्छन। मक्टलंब न्यवन जाट्ड, जांक क्टब्रक माम इनेन जन कर शक बनानो य स्थान शवर्यभने वाकन छिलि ७ जञ्ज नाञ्च त्रका करत्रन ज्थां रा जिल्लान করিয়া নগর লুঠন ও ইংরাজদিগের হত্যা করার যত্ন कद्र। इङ्ख मक्टलब न्यावन जार्ड (य, जन कर्यक मञ्जा अक जान भिनिम स्था तिए छे छ दे व इंडा। कर्त्र। मण्य जि जावांद्र नशर्त्रत श्वार्त्व धक थानि विद्यापन প্রকাশিত হয় যে, কয়েকটা রাজার সত্র অ্যা দারা ख्योज्ड इहरव।

— हित्नता छक्त इंडेट्रांशीय थानालीट युक्त मञ्ज कतिएछ ना, ७ इंडेएर्राभीय जास दात्रा (याकार्गालक বিভূষিত করিতেছে না, তাহারা ইউরোপ হইতে সুশি-किंछ योजार्ग वाभागन कित्रा जारात्व वार्षित वार्षित वार्षित निका मिएउइ। मुख्या जिल जन जर्मान जाई।-निशंदक ञञ्ज निका मिटल्ड । इनिज मिश्ट्य देमना मलटक अक जन कार्राक्ष रमनानी जञ्ज किन्क अमान क्रिया ছिल्लन। धरे कार्रामी मानानी न्यान বোনাপাটে র শিক্ষিত এক জন ছাত্র। বোনাপাট विश्रमाश्रम इहेल हिन छोत्र जवर्ष जागमन करत्रन जवर क्टम त्रशिष्टित युक्त मल्ल प्यादिना कर्त्रन। इंशांत निक्छ थालमा रेमरनात्र। इंश्त्राखिन्शित्र भिक्छ योक्षाशंगदक वाजिबाख कतिया ज्ला अवश्यमि शोलाव সিংহ প্রভৃতি বিশাস্থাতক্তা না করিতেন, তাহা इहेल हेश्रांकिनिशंत इग्न थालमा रिमन्यित युक्त रेनश्रां कथा हित्रकान यात्रन कतिर्ड इहेड। हिन प्तिक (य जार्क्सनीय जामिय) हिन मि गरक निका मिर्ड-ছেন, তিনি यদি জার্মাণ দেনানী বিখ্যাত মলটকের िना इन, जांदा इहेल इय ज जिनि जिन पिट्र थालणा रिमत्नात नागत विज्ञी एक मल रिमना श्रेष्ठ ज कितिएक श्रीतिर्वन धवर इय छ धहे रिमना म्हलत निमिक हेश्त्रांखा कि क्रानित्रांत अक निन वाि वाङ इहेट इहेट ।

मकक्त मा इंश्ल एख इइ एक हा शंक वरमत धई मकक्त मात्र निभिन्न छने लाम छ। का वाग्र इहेग्रा याग्र। ज्यामार्मित्र कलि-काठांत इहे जन मखांख लांकित मधा धक कि एए वांत्र इरेतां ए। देश्तां परे कृषि कतिश उरेश्त লকল প্রস্তুত করিবার নিমিত্ত প্রত্যেকে প্রায় ৫০ হাজার

छोको बाग्न कित्रियाट्डन।

—मन्श्र जिल्ला धक थानि जा जि क्या थार्थना श्रुक्त প্রচারিত হইয়াছে। এ রূপ কুদ্র তাবয়ববিশিষ্ট পুস্তক हेशत शूर्क आंत्र कथन गूजिङ श्रा नाहै। शूछक थानि চর্মের দ্বারা বাঁধান। ওজনে এক আউন্স অপেক। কম। देश श्रक।

जुल्यमन रहेल। देश्लिमगोन मिमला रहेट मश्राम शिएन उथन मर्ड कार्यमिश मनम लिमान करतन। जुला रिमिनिक कर्मानी द्रीत्मत (व उन इक्ति कहिता इ जारिका जथन त्रिक्ष भारत्न (य, এই मनन्म श्रद्भ कहिता भवर्न-দিয়াছেন। বোধ হয় কদিয়ার তুর্গ গতিতে অগ্রসর মেণ্টকে প্রভুবলিয়া স্থীকার করিতে হইবে, তথাচ ভয়ে দেখিয়া গাবর্ণমেণ্টের এ দেশীয় দৈনিকদের প্রতি সৃদৃষ্টি ইহার প্রতি কেহ আপত্তি করিতে পারেন না। হাইন্রা-াজিয়াছে।

नश्च कतियात था छाव इत जल्ला जार्थ मःशृशेष इह- वर्जमान निकारमत्र शिष्ठा वर्जमान ছिल्लिन। जर्शदि क्ति। अहे ऐक्टिश हे कि अक्ति अक्ति अक्ति । व्यक्ति। व्यक्ति पत्र पत्रवादित (व व्यक्ति द्विमादण विश्व विष्य विश्व व

काम्भागि मश्षाभि इइंशिष्ठ इइंशिष्ठ । कार्यामी काम्भागित निमिछ इं जि मर्था जा है लक्ष है। का का कि विक इं इंग रहा इंश्लिশ कम्भानि उ छोक। मश्याद क्रित्र जार्य क्रित्र -ছেল। मकल्ल ভরगा করিভেছেন যে কার্যা সত্তর আর্ इइटन।

— जादिनत्थार्वे जाञ्चत लाक्षित्र जाक्ष ज वार्थात्र ध्यमर्भन कत्रिएउएइन।

— वाकाशादि जिन जन इंडे (ताशीशान इंखिनिशात धक मिन कोन नम्न एक (मिथिट यो इ.ज हिलन। शिथ मधा जो श्री এक शांकि युजा (पश्चिट जान। धरे ञ्ज ज्थाकांत जिथियामी भेग ज्थाय ताथिया किल। ত হিছাদের বিশ্বাদ যে, যে পর্যান্ত স্থতা গাছী অখণ্ড थाकित्व जाव जावा जात्म आत्म अलाडेश अत्वलं क्रित्व ना ! किन्छ इेक्षिनियां जार्ह्यवया जार्ग ना जानिए भौतिया ञ्रा हिष्या हिलया यान। इंशांक लोग-वामौत्रा जाश्वाक्रमण क्रिया शक्वत्रत्र णांश्ड कर्ता धक जन ध क्रिश णांश्ड शन (य श्र मिन প্রাতে তাহার মৃত্; হয়।

— माला एक एक र तक र तार पत्र भन्नी कार्य अकित र को न न व्यवनम्बन कद्र इয়। পোফাল কর্মচারীগণ পোফমাফার-দের সহিত পরামর্শ কবিয়া কতক গুলি পত্রের ভিতর मागाना मूलात जिनिम श्रिता छेश छोरक तलना करतन। পত छिलित भिरत्रांनामात्र क्रिय मनूर्यात नाम लिथा इत्र। ডাকহরকারারা প্তা গুলি হস্তগত হইবা মাতা বুঝিতে शांदत्र (य छेश्त मर्धा (कान मूनावान वञ्च जार्छ। তাহারা প্রেরিত ব্যক্তিদের তানুসন্ধান করে কিন্ত কাহাকেও পায় না। তাহারা অবলীলা ক্রমে পত্র छिलि डिড़िश (कलिश' छे हात मधान्त्रिक छिलिम छिलि नहेट शांत्रिं, किन्छ जांशांत्रां जांशां ना कतिया ममूमाय भव छिल भिक्रमकोद्रत इस्ड जर्भन करत्। ध्रत्रभ विश्वामी वाकिएमत शूत्रक्षात थामान कत्रा कर्छवा।

- खी थजा कोन पिट्न तोज मामन खनानीट श्खाकिश कित्राउ शास्त्र नः, किन्छ विनि नामक स्रांत खीत्नाक जानाज्ज वह स्वाहि थाथ इहेग्राह्म। त्राजा भौमन मद्यस श्रूकरमत नगम खोत्र प्रभारन मङ जार्ब श्रंकव (य (कर नग़ः थाथ रूहे(व ५वंश (लथा श्रंध জাবে সেই রাজ শাসন সম্বন্ধে আপন মতামত প্রদান कित्रिट शाहित्न।

— निकारमत मञी मात्र मानात कद्भत्र गात्र ताक-नी जिज्ज जातर वर्षी । जात कान व्याधीन ग्राजात निक्रे नाई। धनात यथन यूनत्राज ভाরতবর্ষ দর্শন করিতে আগামন করেন তখন জিনি তাহার ক্ষমতার বিশেষ शितिष्ठ सामान करत्रन। नर्ड नर्थ बन्दकत्र इष्ट्रा शादक (य, তিনি যুবরাজকে ভারতবর্ষে আনায়ন করিয়া রাজসূয় यण्ड क्रिंबर्गा जात्र ज्वर्षित्र स्थिन त्राजािमर्भित्र मर् इश्लिশ शंवर्धिय कि मश्र जाश्र लिशा जात्नक मिन व्यविध जाति शोनयोगं याइटिट्र। इंश्लिमं ग्वर्न-भाष्ट्रेत हेण्ड्। य्य, मश्राद्यांनी मिल्लीयद्यत शम्बीएं जांक ए इन এवर अदम्भीय स्थाभीन त्रांखादा डाँशांक " ভार्द-अती" विनया स्वीकात करत्र । स्वाधीन त्राकात्र। इंशत श्राह णाशि किद्रन। मिशाशी यूक्तित्र शृत्य इश्ता कथनइ शवर्षिण एक बाक् बिल्या स्वीकात्र करत्न नाई। मिलाही मश्हांत्र मृर्डि धात्रण करत्र न हेश (मिथिया जिएमीय साधीन —এত দিন পরে বোধ হয় দেশীয় দৈন্যদের অদৃষ্ট রাজারা ভীত হন। তাহারা যখন এই রূপ ভীত হইয়া बांदिद निकांमदक अहे मनम अहरनेव अखांव इया - ग्राम जल मित्र। इंश्लिम ज्ञादिन लात्र भात्राभित य भश जिनि इंद्रा शहर क्ति ज्ञा क्न ना। ज्यन

जिनि गटनक (की गल कित्रित) जा हा कि मनम अ छोत्र जाब इणिशा छेशाधि श्रामान करत्रन। अहे मनन्म अ छोत्र श्रामान काल निकाम इंश मन्नारिन महिङ श्रं करतन नां, छ:-ष्टिलात गाज वाम इएउ छेश अइन कतिता छेश जाने-नात शिनित निदम छि जिया तार्थन। य तां ज श्रूक्ष এই मन प उ छोत निकांमतक श्रान कर्त्रन, जिनि इंश्एंड जिना वित्रक्त इन। जिनि श्वर्णिमए पिकारमत विकास दिए शिष्ठे এবং তিনি रेकियांटि लिएशन (य, ''आमि भावन्दिम एउ निक छे कथन कोन मनम कि छो त था छ इहेगात निमिन व्यार्थना कति नाइ, वाजाज इंश्लिम श्वर्गिय श्वा इंश् णांगांदक लानान कर्तात कथा हिलालन कदतन, जथन इंदा जामि शहन किहिट जिसीक्ठ इहे, उशाह जामात जन जिमट जामारक हेरा अमान करा रहा। जामि हेरा धार्ग कित्रा हेरा वावराद्र कि देश कान का नक कित नाई। शंवर्रमणे यमि जामात छेशत वित्रक इहेता शादकन তবে আমি উহা প্রতার্পণ করিতে প্রস্তুত আছি।" গাবণ-(मणे इंशांत जार्त कान छे जब श्रामान करबन न।। जमन्धि কি তাহার পূর্বে নিজাম কখনই গাবর্ণমেণ্টের কোন দর-বারে উপস্থিত হন নাই। লর্ড নর্থব্রুক যুবরাজকে ভারত-বর্ষে আশনয়ন করিয়া নিজামকে দরবারে উপস্থিত করিবার यञ् करत्रन किन्छ मालात्र जिल्ला किनि भ्रताञ्च इन। এই উপলক্ষে निकारमत मलीत ভারি স্থাতি হয়। इंश्लख श्यां छ छ। इन्त्र वृद्धि अ त्रांक (कर्नित विभिन्न लारक थमश्मा करत। जिनि मन्त्र जि इश्म ७ रामन क-রিতেছেন। কেন যাইতেছেন তাহা কেহ অবগত নন বেরার শইয়া গাবর্ণমেণ্টের সঙ্গে নিজামের বিবাদ আছে। मिहे विवादनं कोन क्रिन क्रिन क्रिका क्रिका निमिख इस छ जिनि इंश्लिए गंगन किंद्रिज्हिन। जिनि यथन इंश्लिए शंभन करदन, जथन जिन जन जांत्रव जमामात जांकां मदल देश्लाए गंगन कित्रगंत्र छे: मार्ग करतन। अहे जिन জन জगामाद्रित नाग यूक्नम छ र् वाश्र त्र कर वार्षञ्ज, त्रांलाव जर वार्षञ्ज। ज्ञा जालान रेरांत्र श्रदेखानाम रहेट गांज करतन। जाश्रता य राहेखा-বাদ পরিতাগা করিয়াছেন আর সুকুন্দম তারে সমাদ भारेतन थ, डाँश्व गृश्मार रहेश विख्य कि इरे-शांट्ड। তारांत्र शत मिन शोनां व जादत मत्रांम शाह-लেन (य, जाश्रांत खोत मृजा इहें साहि। ज्जी सान यत्रीन জ १ जात मचाम शाहिलन (य, जात्रा मागात इहात करत्रक थानि नानिजा जित्र जनमन्न इहेग्राट्ड। अहे मगूमग्र विशापित निमिख ज्यापादत्रत्र। इंश्लिट श्रमन क्रिट्ड वित्रज इन नोई। जो शत्रा ज वाश्वाहात्रत्र महन् हे लिए शंगन कि द्विष्ठा हिन्।

# প্রের্

## মহিষ্মারীর রাস্তা।

ভারত সংস্কারক মহিষ্মারির রাস্তা হওয়া উচিত किना তाराब विट्लंब युक्ति वा कार्राना मर्भारेशा কেবল কতক গুলি বাক্তি বিশেষের চরিতের উপ मियादियार्थ कित्रियार्छन। ५३ कात्रलाई वाक्ला मन्नाम পত्তের উপর সাহেবদিগোর এবং সাধারণের এত वाजाता। তাহার। যুক্তি ও কারণ অবলম্বন করিয়া এ विषदत्र छर्क कतित्व जाभावा जाभाष जाभाषित्रात कात्र मन्ध-ইতে প্রস্তুত আছি। সকল বিষয়ের পক্ষাপক্ষ ও মত্য-মত আছে, অত্তর মত ভেদ হইলে ভারত সংস্থারক यमाणि करू विलि छ हेण्या करत्रन छ। श्रहाल मश्यातक नारमत्र शतिवदर्ख जाना नाम ताथा छेडिछ। अमन कि, তিনি রোড দেস কমিটীর মেম্বরগণকে, অমৃত বাজারের मन्भानकरक धवर जामारक करू विनट जा है करत्रन नाई। তাহার মতে কোন হাকিম দারা তদ্স न। इरेग्ना निश्यत बाबूत थाखाव छ जनूद्राध्य मकल्ले रे महिरमाति तांछ। इख्यात शत्क मशक्ता कति-शांद्रम पर् छे ज तांखा बाता व थातियांत पार ज्ञान

बत्नत्र (कान डेशकांत्र मर्मिट्ड(इ ना। এमङ ছल्ल जामांत्र बक्ता এই य्व, जार्फी अहे त्रांख। मिशचत वातूत श्रांखा ष्णभूमादित इत्र नाई। ञाब জেलाब ভूठ श्रुक्य माजिए देवे क, वि, शिकक मार्ह्य यथकात्न ध श्राप्त दिर्भयं उ জয়नशत्र थाना পद्रिमर्गन कत्रिए आहेरमन रमहे मगग् তিনি এই থানার অভান্তরের অনেক স্থান পরিদর্শন क्रिया ছिल्ना ७थन এ প্রদেশের কতক গুলি বাজি व विषय जा होत निकं वे वो हिनक मद्रशेख कद्रिन। তাহাতে তিনি নিজে তদন্ত করিয়া এক মিনিট লিখিয়া किंगिमनात्र माट्ड दिव निक्छे शांठान। किंगिमनत्र माट्डव र्ध मिनिष्ठे, जानूमादि द्रांष रमम कमिष्टिष्ठ প্राञ्जाब कदबन व्यवश् (अण मिन कि मिरित समन्त्रां जिन जूनां देव वार्वाम ज इहेट महिस्माति পर्यास त्रास्था প্रस्तु इत्या व्यव-शातिक करतन जार वाक हेर्यरतत एक शृष्टिं माजिएक हे ज কালে উপস্থিত না থাকায় ডায়মণ্ড হারবারের সব ডেপুটি বাবুর দারা ঐ রাস্তা তদন্ত হয়। তাহার मटि वात्रामटित পোলের निक्छे इहेटि भौ। एउत हाछे ए वें। ऐता व राष्ट्रे मिशा धो ताखा महिषमाति याहेला सिलिय यश्यके छेशकांत्र इय़, जार्था ९ अकर्ण (य त्रांखांत्र निगिछ लाइन (मछत्रा इहेत्राहि जाइनेत्र शांक्टम जाश्म श्रिक्ष माइल मिक्निन मित्रा याईटल यदथ छे डेनका ब इइटनक। वातामण्डत वाजाएतत निक्छे ना इहेश वातामण्डत পোলের নিকট হইতে হইলে স্থাবিধা হয়। ভারত मश्कातक जामात्र मट्डब व्यङ्गिराम (मट्बन्स वातूत य भक ऐक क कि त्रशं एक न जारा थ र भर क मिर्ड किक खेका इइटिएए। त्रांखात थक मूथ २०। २० तमी छेखदित्र मित्रिया याइटल (कान छेशकात नाई प्रवर 30 । 30 त्रभी मक्तित्व मित्रा जामित्न मन्भू न उपकात जाइ इंश मङ्ग कथा नग्न। তথে ইহা স্বীকার করা যাইতে शाद्र (य উত্তর অপেক্ষা দক্ষিণে স রিলে অধিক উপকার।

জয়नগর থানা হইতে গ্রবর্ণেটে যে দরখান্ত

করা হইয়াছে তাহার অধিকাংশ লোকের জয়নগর है। डेटन वाम, ग्रूडबार डाहाबा (ब्रांफ मिम ड हाडेम है। म (मन न।। यादा इडेक कि कि कांत्र न तांछ। इछता छेडिड िश्व जात्नाह्न। क्रवा कर्ज्या। जावज मश्कावक लिथित्राष्ट्रन (य, मश्यिमात्रित त्रांखात शायां व्यक्षि लाक नाई, এই জग्र উহা আবশাক नाई। রোড সেস পোল টাাকোর মত মাথা গণ্তির উপর ট্যাকা অবধারিত इय नाई, इंश जूमित त्रांका खत छे भेत ज्ञात्र इंश हिं। व्यव या शांद कि व कार्या व देश व इस तम विषय রোড সেদ টাকাব্যয় হইতে পারে। কেবল লোকের शंडाशाट्डब ज्यविधा ना দেখিয়া क्लिब छे९शन खवा मकत्नत्र व्यापमानि व्रथानित्र प्रविधा अवश्कन निकारभन्त च्यूनिया, त्नाना जन नक्ष जनर अधिक शिव्याति गिछे खन ना आहरम এवर आवनाक मर्ड मिछ জन नउग्रा धर्रे मकल ज्विधा-(पिथिटिं रहेरिक। धरे द्रांखा दांद्रा थहे नकल कार्यात्र अ वाणि जात्र यरथ छे ज्रविथा इहरवक। मर्गान इइ याद्य। जात्र इइ धक निर्मान या इट इ। नश्र थानात উত্তর অংশে ঢোশা नागक यে একটি ঘাট ছিল তাহা ইবগাও খড়মপাড়া খালের দেরিংত্র मुश প্রায় হইর।ছে। এক্ষণে মগুরাপুর থানার व्यन्ति । जन्म । अ वाक्षेत्र भागात व्यन्ति अर्गा-शूर्वत यां छे जिन्न जा नश्त थानां व जना छेथां त नारे। (नल्या थान (यक्तर्थ ज्वां हेश ज्ञां इरेज्डि जाकार इरे जिन वंदमर तत मर्या घाषे इरेड े २।० (कान मृत्य निका थाकितक। জয়नश्य थानाय शुख मिय्रा नमी वर्छ। जाएक जाशक कान घार नारे। वातामाट्य (भान इरेड शिंदि इत राष्ट्रित राष्ट्रित वार्षे वितास राष्ट्रित अनिया महिसमाति द्राखा প্রস্তুত হইলে জয়নগার থানার भधा छान निज्ञा द्रांखा इहेशा घाषे श्रञ्ज ह्या । अश्राप-लित्र भानजीत চলাচল অধিক। धे ताखात थान निया महिषगोती इइटिं किलिकांडा शर्या खकती भालडीत ल्थ श्रञ्ज इत्र। अकृत्नं अश्रदम् न त्रम् त वत्नत्र मत्या

(कान मालेडी व्र शथ नाइ। अश्य श्रञ्ज इहेटन महिषमात्रि পर्यास भौता उपरांत जाना जीए जिनिय প্র আমদানি রপ্তানির স্থবিধা হইতে পারে। মহিষ-माति घाषे इहेल ऋर्गार्श्व जार्शका महिषमातिए जूमव-वनजां जवार्गि मखा मद्र थाथ इछ्या याहे जि शाद्र, कांत्रन ख्र्यार्भूत অপে का महिवमाति अधिक निक्छे, विष्न-या अध्या भिर्दा ममून । या भागानि जिनिय जयन गर्त जा -निटिं इहेल महिस्माति অशिक। अधिक राग्न शिष्ठ, कात्न स्र्वः श्रुव इहेट जयनगात भान जी ज प्रवापि जानित মগারা দিয়া আদিতে হয়, তাহাতে অনেক খুর হয় কিন্তু মহিষ্মারির শালতীর রাত্তা অপে দূর এবং माजा। এই রাস্তার খাদের দারা জয়নগরের অভা-खरबब ममख छात्न मालठी शंडांगंड कबिरंड शांदिरक কারণ এই রাস্ভার খাদের সহিত মজা খাল বা খাদ প্রজারা জল নিকাশ ও জল আনিবার নিমিত্ত অতি অপপ नारम योग कित्रम फिर्ड প्रातिरक। वक्तर्व मर्वदा भाला शेषां श्रां कि कित्र था त्रमा। রোড দেদ কমিটি বারাদাত হইতে মহিষ্মারি পর্যান্ত রাস্তা অবধারিত করিয়াছেন, অতএব বারাসাতের দক্ষিণ ধার দিয়া রাস্তা প্রস্তুত না হইয়া যদ্যপি মধ্য স্থান দিয়া সরবেয়ার বা ইঞ্জিনিয়ার লাইন দিবার সময় किश्रिः छे बदत मित्रा थारकन छ। इहेल राष्ठ रमम किंगित कोन पिष्य मोरे धवर महत्वशांत्रितांत्र कोन विश्विष (माघ नाइ, कार्रा अम्प्रित अवश्वा छ। द्वारा छड जाल जारनन ना। छेना इतन ऋल निम्न लिक्षिड विष्युष्ठी (मिछ्या इरेल। रेराट द्रांखा रुखा छेडिङ कि ना विद्वहना क्रित्वन। (म निवम वाक्डेश्रेत मव ডिविজ्य माडवा हिकिৎमालय छेशलएक धक्छी मं छ। इया छ। इराउ अ थ-(मत्भंत्र अत्नक उप लांक छेशश्चि हिलन। (महे श्वांत মহিষ্মারির রাস্তার বিষয় আন্দোলন হইয়াছিল। অনে-क्तित्र मा एक पार्विष्याति त्राखा इक्टल व्यानक छेशकात व्यादि। ज्याद्या मङ्ग्रहल वर्षु निवामी व्याज्य क्योमात्र | ३२ वर लाढि काल था अक्ट था गार्य व्याद्या प्रेषी ত্রীযুক্ত বারু যহ্নাথ বস্থ ব্যক্ত করেন যে, তাহার কোন পুষ্করিণীর স্থান অদাবিধি বিদ্যমান আছে কিন্তু তাহা-थानमाभात्र व्याक्रीत वर्ष। कात्म महिष्मात्रिष्ठ हाथ एक जन नाई। ध इहे श्रुक्तिभीत शाहाएक छेशन করিতে গিয়া পীড়িত হইয়াছিল। কোন গতিকে অতি স্থমিষ্ট ক্ষীর খেজুর, গাব, খেজুর, বকুল, তাল, मि वाक्तिक वाफीट वानिवात निभिन्न मश्दान शाक्षत शान शान थाईह, त्रमण छ छ केन धवर वानस्म विखन किछ महियमातिए भालकीत द्वाता किया शिरा, যাইবার কোন স্থবিধা না থাকায় তাহার কোন ভত্তা-বধান করা যায় না, তাহাতে তাহার মৃত্য হয়। মহিষ্মারি জয়নগর পানার অন্তর্গত, বর্গাকালে। হয় যে ভূমি হইতে ২০০ হন্ত উ দ্ধি মনুযা অনায়াদে উহার शंगनाशंयत्नत जायू विधादक य किया तिएक श्रीन्यत তত্ত্বাবধান হয় না, স্তরাং ঐ সময় ইংরেজ হাজ্য ক্যেক বংসর গত হইল শেবোক্ত লাটে শান মধ্যে মহিষ্মারি থাকা না থাকা তুলা। স্তরাং ভারত সংস্কারকের ও বাক্ইপুরের ডেঃ মাজিমে টের कर्शात छेপत बिर्डत कतिश जामात जातक खम इहेता जिल, किन्छ अठएक धी मगश श्रांन पृथी करिया। আদিয়া আমার मि ममम जम मूत इहेग्राइ। अ ममख कात्र शर्माला-কি কারণে বাণিজ্যের উন্নতি হইবেক তাহা পুরুষ পত্রে চনা না করিয়া ব্যক্তি বিশেষের চরিত্রের উপর সংক্ষ:- থাইবার পাথর, খুরা দেওয়া শীল ও এক ফুট কিউৰ द्रक (मायाद्रांश कदिशाद्रिन उ कहे, विनशाद्रन। তিনি যে রূপ বলিরাছেন তাহার প্রতিশব্দ আমার निक छै नाई य जाशांक छे जब मिर्ड भावि। जित बहे मांब विलिटि श्रीति य य श्रीत क्रिटेत य जारा श्रीत्रश्री शांक পীড়ার সময় তাহাই উদ্গীরিত হয়৷

धरे त्राखा प्रात्र। (कवल (य छ्शली नेमीत धोत इरेड शिशांनि शर्या ख य वक नि ता ख इस्तिक वम क नग्न। छ शनी इरेड थिय़ालि थर्गछ धक्री थाल छञ्ज इरेरक। **डाशामण श्रांतवरत्त्र डेल् त मिशा (य श्रांन डे ऋ इहेश। (श्रांन-**পোতায় আদিয়াছে তাহ। বারাসতের পোলের নিচে काष्ट्री थालिय महिङ मिलिङ इहेशाइ अ वातामार्डिय পোল হইতে মহিষ্মারি পর্যান্ত হইলে বারাসত ছালের কিছু মাত্র ধ্রংশ হয় নাই এবং উহা এরপ শক্ত इरेडि मार्चिमाति श्रांख शाल ७ श्रञ्ज रहेल। जारा हिल य मिरे ज्ञक थण २७ कित्रा कारिया श्रङ्गतिनीत इई शास्त्रंत्र ज्ञात्नत्र याशक छेशकात इहरतक। अञ्ज्ञ किन्त इन्त्रभागि छेश मृजिकात माह्य मिनाहिया यादेख ह मिहियगाति त्रांखा बाता वांकीशूत अ जाश्रम बादतत्त्र अथात्म खात्म खात्म यांजित माधित मधा अद्भव माश्रमेत मात्र

य (थ से छे भका द जा ए । महिसमाति इहेए जाममानि काछोनि (धान(পांछ।, रुष्ट्रे शक्का, मित्रमां, छोश्रमण होत्रवत्र उ उमरार्ग जानकर जाम श्रमास याहे जारत। जाहा इरेल ध প্রদেশস্থ সমস্ত প্রধান্থ হাট ও ঘাট প্রস্পর मिलिङ इয়। গাঙ ছুর্ভিকের সময় জয়নগার থানার অভান্তরে চাউল ও ধান্ত পাঠাইবার নিভান্ত অসুবিধা इहेश हिल। अहे त्रांखां ही इहेटल छेहां त थार्प त चांता ভिरिया: ७ धरे जन्म विथा मृत इंडे दिक ।

কুশিপা রাস্তার পশ্চিম ও ডায়মগুছারবরের পুরু এই प्रदेषी त्रांख'त मर्धात ভূমি সকল অতিশ্র নিম, অধিক জলে इंग्जा इहेग्रा मर्लमा পতिত शांक। खे ज्ञिन मिन অংশ যাহ। বাঁকীপুর ও স্লতানপুরের থানার অন্তর্গত পডিয়াছে তাহার রাজার খাদের দারা জল নিকাশের ञूर्विधां इहेरवक। তবে মহিষ্মারিতে जूलू ( वत जावशाक অত এব এ সকল বিষয়ে যাহার। ভাল করিয়া বিবেচনা क (त्रन ना छ। इ। त्राचे मत्रथा छ ऋ। क्षत्र क ति हा। थ। कि द्वन डाँश मिशारक ভान क्रिया त्या र्या देंगा मिल्ल कथन स्याक्त किति एउन न।

निश् बी इतिमाम मज। गिजन श्री।

### ञ्चन वन। (পুর্বে প্রকাশিতের প্র।)

बांश निघीत किश्वि९ शिक्टियां खरत २२ नश मारि व्यर्थार वक्न उन्। य प्रमिशी अ (इ) विशी नामक পরস্পার পাশ্ব স্থিত হুইটা সারোধর আছে। বড় দিঘার জলকর প্রায় ৩০ বিঘা এবং ছোট দিঘীর জলকর প্রায় ३৮ আঠার বিহা इইবে। বড় দিঘীর জল নাই কিন্ত তাহার পাহাড় অদ্যাবধি ১৫।১৬ হাত উচ্চ রহিয়াছে। ছোট দিঘীর জল লবণাক্ত এবং তাহা সর্ব্ব সময়ে থাকে। वड़ मिघीत পाशाएक छेशत इती छकी, जामनकी अ বয়ড়ার গাছ বিস্তর দেখিতে পাওরা যায়। প্রাক্তর জমে। কোন কোন স্থানে বহুদিবস স্থায়ী ও উ ব্ল প্রায় ৬।৭ হন্ত পরিমিত কার্পাদ তুলার গাছ বিশ্তর (पशिद्ध शांध्या याग्र। अहे मक्स त्रक अंग्रांक न উপর দাঁড়াইয়া থাকিতে পারে।

আবিস্কারাব্ধি ভত্রতা লোকেরা ইহার জল পান করি-ভেছে। এই मद्रायद्वत ठकु कि क जना शर्या उ ए इत वछ वछ भागदात्र कवित्राक्षी थल, काना छोल। छाज राष्ट्री, कलमी, (प्रत्का, वमना, मानक, (छल्ब डांप्ड उ পাन थाইবার নাটির কঁড়ে পাওয়া গিয়াছে। একণো (इ। वे नागर्द्र थ। ष्ट्राष्ट्र (यक्तर्थ हैं। फी कन्नी गिष्या थारक धरे मकल शाफी कलमीत शक्रन धारिकल (मह तथा जिन किंछे माणित निस्त्र जिलीता (वरलाताती कृषी शाउता যাওয়ার বোধ হয় মুসলমান রাজ্যের সময়ে ইহাতে मनूर्यात वर्गां किल ; कार्श मूमलमानिशित इहेर कहे अङ्ग्लिश (वंदलांशाविष्ठ छोत्र वावश्व आवख इश्वाह वकूल उला छो। य छाय ७ किं मृ जिका व निरम्न अकिं। নাৰিকেল মুক্ত এরপা অবস্থায় পাওয়া যায় যে ভাছার छार्श रहेल छात्रमञ रात्रवत्र रहेएज এक लाहेल जार्था था छे अञ्च कति त्रा किवात भन्न जार्त्रा २। ३ वहमत भन्न जार्थ मभम (ब धक्री थाल धस्र इहेल धवर थे था (लंद ) इन । छेरा द्रा था जिल भी । विका क्रिक भी ।

कलम श्रिश्र (शें (हे कांड़ अलवन जान मियांत हुनी यालमा श्रांख्या तियाद्व। अहे कड़ि डेएखालनकालीभ लेख किल किछ नागुत न्थाः शहे जाका कुर्व कहेंगा याहें । लिखां क योनगात गाम खाग्र ५ कू: हेत अधिक इहेटर। हि जुनिदर्शत वा गूमनमान निर्शत त्रांज एवत खाशम अभारत वह स्थान य नान शासु इहेड वह अक्र अकन रूली अधनमा जारांत्र माका श्रामान कतिरज्हा

३० नः लाटि ननीत नात्न या मकल स्थान प्रित्रांत मख व नत काल कारन मृ जिकां वे मस्या कि मनू स्वात का कि शक्षत्र शांखता यात्र । ककीतिनिर्धत्र नाग्य छेशत्र शलांत्र कैं। हिन्द्रां विला

छोकीत शिक्टिंग १२ नश लाए ए उन्तन जातात धकिं श्रिक्ति श्री थनन कित्रवांत्र ममर्ग थांत्र ७ किं मृजि-कांत्र निया अन धाकात्र इस्वार्थ मुखिका ऐर्डालन कत्रा शिश्वपित्त । जाङ् कार्श्या (भाषा देश छेखम क्र भ ज्ञानिशा ছिল। धी मानिएक छे खिएनत बार्भ धक वाधिक ছिल य किछ इस म्लाट्य मुखिकांत्र महिक छेहा मिलिया याहेज।

थिमित्र देव इहेट का नी घाडे मिया त्य मजा शका शिष्ट्रा मार्शित महिल मिलिल इहेग्राह् के शकात कान श्रात्न शूर्का भारांफ कान छाटन भक्तिम भाराफ मित्रा मात्रीत जाकाल नारम धक ताखा ज्यमत वरनत डिड्र शर्याख शिशाट्य। जे ब्राखा थाटख खात्र ३ वर्गि व। (मण् शिनी जाट्य। छेश्नितात छल जनगविध शानीदात्र निभिक वावक्ठ इहेशा जानिए जिल्ला निर्माण वार्याण एउत ्रिन (भाशा श्वर्य माही हो छात्र भाग हो। ज नात्म धकिनी शुक्तिगी जाट्य। की शुक्रतन भाषार्ड छे भन्न किली शां इत्र जाशां क द्यां एक्त्र शां कर्श कि श्वाहितीत खल অতি উত্তম, धौषाकाल क्षां । ১০। ১२ হাত জল थादक । छेर्। त ८ छ। त एक। म मिक्न (रुए का ज भारत भारत मर्था थाड़ी कड़ीत शिक्टम मातीत त्राखात शाद्य टिंडका नारम अकि श्रिक्षतिनी जाटहा छेश्र जल जजुर-क्रसे। धकदात माथ कित्रिया (मिथिया हिलाम छेश्र माम थोश ( इंग्ज, जन ) २ इंग्ज ज्वर शक्त थोश । १ व इंख । र्ख श्रुकदिगीत आ० दिन मिश्रा एक लागा थाल कर्छ ल्लाना थाल थालिए अ श्रुक तिनीते जल कि हू गांव मन्त इस नाई। धई मजा शंकात छई शाट्य नानाविध मनित्र उ दोंधा च टिव हिरू भाउरा यारा। जनगत थहे मजा शक्षांत्र थिक्टिम धारत ध्वरः मिष्टिलशूत हेरात हरतत छेशत जारह। इंश य शकांत जाडाखरत हिल श्रुकतिनी थनन कानीन य भिकात शासन अ नमत উट्छानिङ इत्र जाइ। इंद्रांत माका जामान क्रिटिट्र।

शुम्ब बदन नानाविध इम (मिथिएड भाउरा योग। खग्राधा (कछड़ा नांइ, यांडे, जान वा शशु भाइ, श्रूडान लांड, शांखांत, ग्रॅमीत्री, नांग, थलमी, यळाउमूत, इहेल। धहे छत्रांनक विচात मिथिता यावजीत लांक मण-পাকুড়, নল, হেঁডাল, গরাণ, বেড, বোঁচ সিঙ্গে, চেড়ি ক্ষিত হইয়াছেন। আবার ঐ রূপ কেবল একব্যক্তির পক্ষে श्चिमित्री, द्वादला, बद्धा मद्धा दिन्नीत वामाम, निम এवर मिनीय कुल्लत शांइ व्यक्षिक शित्रमार्ग छेर्शन इया প্রথমোক্ত চারি প্রকার কার্চে উত্তম রূপ গঠনাদি হইয়া थादक। दिखी पूँ मित्रीत हात्ल छेखम तिथ मिछ खाञ्च छ इय ; द्यांथ कृति यमि छेउम्रतथ भाषे कता यात छाइ। इरेल रेश हरेड काश्डु श्राहु श्राह्य । আম গাছ পুতিলে আম হয় কিন্তু তাহাতেঅতান্ত পোকা देश।

জন্তর মধ্যে চিত্তে বাষ, ডোরা বাষ, গাণ্ডার, মহিষ, र्तिन, वदार, लिक थंद्वोग, बना विष्ल, मृताल, (भँक-लियाली, लेखांक, थंद्रशम, श्रीमाण, वागद, वना मूद्रशी, नानाजाजीय (हैं, मनिया, सार्वे, केंदिना, श्रामनजाज, छोत्र किम, महान वा काली (कछेडे।, वताहिका, माडेफशा ध्यश् (कछर्छ ध्यश्ना वााखी, मखान इहेवात्र शूर्का थए कृती मिन्ना बामा श्रञ्ज करता (अरकवादिन जिन्ही कतिया भारक लामन कर्य। वाष्ट्र, वाष्ट्रीय श्रूक्य भारक मिथित्म जम्म कितियां कित्यां कित्या बतारी मजान धमन

कतियात शृदर्भ काडे कृती मिश्रा शांडकुशांत्र नेगांश वामा প্রস্তুত করে।

ञ्चल वरनव जल এङ लोगी (य यमाणि 500 मन জল জ্বাল দেওয়া যায় তাহা হইলে প্রায় ৩ মণের অধিক छ ।। मर्वत कम लवन छेर्थन इग्र। बरनत म्या এक প্রকার ঝাউ ও ধান গাছ জ্মে। তাহাদিগের পাতা ঝাড়া দিলে এত লবণ পাওয়া যায় যে ষদাপি কোন দিন কিন্তু সাতক্ষিয়া হইতে কুণ্ডলা প্রান্ত একটা রাস্তা शृंद्य लवन ना थांदक जाया इहेल भाजा बांदा किया তত্রতা লেশকেরা লবণ লইয়া থাকে। অগ্রহায়ণ মাস হইতে काल्खन माम পर्याख जूमात वन जिं जा जिल्हा कत जान कि ह বর্ষাকালে জ্বর ও জীমকালে ওলাউচায় বিলক্ষণ প্রাত্ত্ব যদি ক্ষমতাধীন হয় তাহা ছইলে আমরা ভর্মা ভাৰ হয় ।

(क्षणः धकाभा)

### षख् ७ विष्ठांत।

मन्भ्रीड अरे जिल्पां कर्यकिति जाभ्यधाजनक (योकक्या इडेय़। शियाह । इंश्ट्रिकावाक्य विदेशिमान-निर्देश मिक्न मीमात्र मार्वक श्लीफ त्रांक वक्ती वैनि जाहि। जाहा धकः न ता खाति भ भितिन उ इहेश हि। छेश्त ब्रेशियं दङ्कान जावि जानक छिनिन जान वाशांन उ उँ छেत क्वि जारह। क्वि मकल वाशांन उ क्लिवयाभी वा धकाल शर्या छ निर्विष्य (जारा पथल कतिया व्यामिट्डिश मन्नु जि मकल वाशातित यथा একটা বাগান জীলজীযুক্ত বৰ্দ্ধদানাধিপতি জয় করি-श्राट्म। डाँशव धक खन धर्जिन्छ की मथलिक छ जभी व्यर्था९ (वड़ांत्र ভिত्त इहेट माही काहीता के वातात वक्षी घत्र निर्मान करत्न। जे छात्न मांने कांने कांने धरे (जलांत्र ডिकी कृष्टे देखिनिशांत्र तांखां छालू स्थानत माजी काछ। इरेट उहि बिन मा जु उश्य माजिए छ छ मारहत बाराइदात्र निक्छे तिर्णाई क्द्रन तिर्णाई शाह्या माजिए छेडे माद्द्व धी वाङ्कित विक्ट्स भाकस्म। ठालाइवात जाङ्का मिन। किन्छ देखिनियात्र मार्ट्य क्षेत्रान्छ। जाद्यात्र जादीन नय वलिया जाशि क्यांय मिडेनिमिशान उड्यमियां य वातूत প্রতি ভার অর্থণ হয়। গত শুক্রবার প্রতঃকালে माजिए देवे मार्ड्ब, मात्रा।, अ मिडेनिमिलाल उजत्मित्रात्र वहे जिन जादन शिया जाहार विश्वात कित्या जादनन अ थि मिन थात्र अक्टोत ममत्र जाशांक जामानट इन-জित कित्रिता इरे माम कात्रावाटमत आखा (मन। कि छत्रानक! य वाङ्कि कात्रावाटम शिन भि ७३ विषयत्रत জग्र शूर्वि क्लान ब्लाजीम शाज्ञ नाई, किन्ना म्म मज़काति त्रांखा काणिताट्ह कि ना जाशत्र निक्छे त्न दियग्न कान व्यमान लख्या इय नाई। जभी वकाल भ्यां उ मथल कित्रिया ज्यामिएउए कि ना ध विषय उपरांत निक्छे क्लान थ्रमान लग्रा इहेल ना। थ्राजःकारल माजिएको छे मादश्य जाशादक धित्रमा जानित्नम, द्वना वक्षीत्र मस्या जाकात्र इहे मान कात्रावादमत जाका शर्षित्राष्ट्र अमन नत्र, व्यात्र प्रश्र वाजिएक कि ज अभ अक সময়ে কারাগারে প্রেরণ করা হইয়াছে। যাহার। कांत्राशादत शिल जाश्रापत थाजि यि कि जाश्राप वर् প্রকার আভা হইল তাহা তাহারা বা অপর কেহ কিছুই जानिएड भारिन ना। धई ध्यकात विठात इहेटन धहे জেলার লোকের এখানে বসতি করা যে ভার হইয়া छेठिद्व, जां श वला वाळ्ना।

> अक्रीख वर्णवन । व्यवशा जानक वागना (जन। मालम् इश्राजानाम।

পতা প্রেরকের প্রতি।

बीःदर्शायम जामा-माश कित्रियम भूमः ध्या বিষয়ে প্রস্তাব প্রকাশ করিতে আমরা প্রস্তুত নহি। बीमजी मशुत्रांकी नमी-लब (धातक धाइन पात्रन)

कतिश्व (कन य शव शानि निश्वाह्म जारा जामता व्चिट्ड भातिलाम ना। जाशांत भाज ममं धरे। वीत ভূমের অন্তর্গত কুণ্ডলা নামক এক খানি আম আছে। এখানকার ভূমাধিকারী বাবু পরেশনাথ মুখোপাধ্যার। অতিশা সদাশার বাজি। ইহার যজে ইংরেজী বিদ্যা-लग्न, जाक्ष्यन, खेय्यालग्न श्रज् ज मश्काणिज इहेन्। याश्टि शञ्च इय श्रद्धा वावूब जाशाज मत्यादा श विरमिष छेशकात्र इहेरव। छाइ। याम इत्र धवर शहतमा कति जिनि मन्द्र याश्राह्ण तालाहि श्रञ्ज इय छ। इति योगो फ कबिदवन।

बीः—माङकोत्रात (७: माजिएडेएहेत व्यर्गाङि कदिया निधियाद्वा (७: वावूव यद्व छे छ मव छि । मत्नत्र नाना छात्न कुल (थाला क्रेश्राट्ड शर्थ जागान, ममनूकान अस्या किन्छ इः श्रत रियत य मार्थ। আभ খ! नि डाँ श्रां मककन पृथि . ज शिं उठ इस न है। वहे जारम जरान वक मं ७ घत वा मार्गत वम् जि। उत्तर ज्ञां जा जिल्ला विखन जारह। किन्छ आम थानि এत थ जनमाय (य ऐशार्ज नियुज नाम्य नाम कर्त ज्वश जारनक श्चाम जाश्यम जनत् छेनत् इहेट इहेट मण्या जि व्यावात विशादन अनाष्ठीत व्याद्वीय इहेशा याम शानि উল্ভিন याचेग्र উপক্র ছইয়াছে। প্র প্রেরক সাত-की त्रांत एड गांकिए डेटिक मानून हा जनूर त्रांध कि वृत्रां-ছেন যে তিনি যেন এই আম খানির প্রতি কটাক্ষ পত্তি क्टइन।

ত্রীঃ—অম্বিকাচরণ ঘোষ মহিষাগুনী—আধুনিক वर्षत्र व्यवस्था अरे क्रथा वर्गन कित्रिया हिन ; - "य व्यविध विषय जन जन्म निव अधिकाश्म मृ जिका मञ् य त जवन व्यथन। भाषारक्त कर्ण शिव्रणं इर्गार्ड; बर्ट प्राण्य दिश्य भागामाली नमो जोत्रष्ट क्लिखंत जिथिकार्य विलाजीशिनिशांत कत्रजलम् इइशा द ममनाद आंकत इन्ताटि जागता जादातक जाधुनिक वस वना (य অবধি ক্লাধকার্যের উপযুক্ত মৃত্তিকার পরিমাণ হত্লাং इक्ति शाह्या (ছाण्य १६ (मटण त मिद्रां मित्रां मित्र प्राति ९ दला दक्त षावश्वा मिनर मन्म इहेट एक वाशक छेको न मून दमक ( ए: कल्लक्षेत्र (कत्रामी जामना जाकात्र श्रक्ति मश्या। त्रिक शाहित्वद्ध वामना जाशाह वाधानक वस विला (य, व्यवधि व्याष्ट्रेम धाना मानकला इंगाल इलिम व्याप्त (त्राहिश्मश्मा ७ श्रुत घन इरक्षत शतिवर्द्ध वाल कुन हाल मूर्गत माल वै। मार्था छ। श्वासी मध्या छ ज्ञा भित्रमात्न बलका इक्ष यथामावञ्च निक्छ युवकशात्वत काश्वत मध्या भित्रिशनिज इन्त्राह्म जागता जानात्क जधुनिक वन वनि। य जन्ध शिकित्मिवाञ्चला वल महिल्पान कार्शि बुनिएड उ मानाविध नाठिक পড়िতে लिथियाहिन उ ममया-ভাবে সামাগ্র গৃহকর্দ্রে হস্তক্ষেপ করিতে পারেন না भाखड़ी नममिनी अथवा मान मानी अভादव श्रम शाशी व्यर्गार व्यामी व्यर्टि इसन कद्रिन वामत्र। जाराक वाधु-निक वल विन। ६य व्यविध बल महिलाशन वायू । काटल विमानियात्र श्ट्र मिंडा फिडिंक दिया छ श्रक्षित निकेड लिथा পড়া শিখিয়া खोজনোচিত ক্মনীয়তা ও লজা भीनल्थ इ। त्राहेशाट्ड उठाकथाठ उ (वाद्यामत श्रज्जत खोड़ार्व श्रेष्ठ लिथिए शिश्रा ममालाइकिमिशदक জ्वालाखन कतिराज्ञ छ एमरलात धन जाश कात कितिराज्ञ व्यागत्रा जाश्राकिक वक्ष बला। य व्याधा शिक्तम (मनी म ती जि नी जि जि निका व ममाद आद निक कतिया बळ्लांश्रमं खाठीन जाठात रावकात भावित्र्जन ख . रूजन धोवर्जन इहेगाएइ जामवा जाहाएक जाधुनिक - विष विला ।"

अञ्च अर्थे अधिकां कलिकां छा, वाग्रवां जात आनम एख চাটুষ্যের গলি २ नং বাটী हई তে প্রতি ব্রহস্পতিবার बीठल नाथ तारा द्वारा श्रका निव रस।